RNI-MAHBIL/2010/33592

जैन तीर्थवंदना

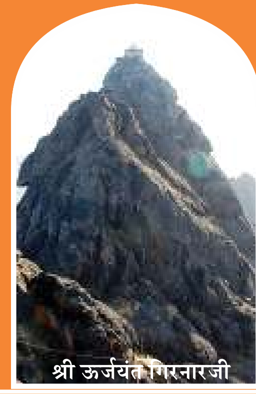

वर्ष : 16	अंक : 4	मुम्बई, जुलाई 2026	पृष्ठ : 32	मूल्य : 25	हिन्दी
VOLUME : 16	ISSUE : 4	MUMBAI, JULY 2026	PAGES : 32	PRICE : 25	English Monthly

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

तीर्थंकर श्री 1008 नमिनाथ भगवान, मिथिलापुरी, बिहार

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 16 अंक 4 जुलाई 2026

संपादक मंडल

प्रधान संपादक

डॉ. अनुपम जैन, इंदौर

संपादकीय सलाहकार

डॉ. वीरसागर जैन, दिल्ली
डॉ. अनेकांत जैन, दिल्ली
श्री राजेन्द्र जैन महावीर, सनावद
डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर

कार्यालय

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन :

E-mail : tirthvandana4@gmail.com
Website : tirthkshetracommittee.com

'भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी' को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी.पी.रोड, मुंबई के सेविंग खाता नं.13100100008770 अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी.पी.टैंक, मुंबई के सेविंग खाता नंबर 001210110008627 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें।

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

विज्ञापन आमंत्रित हैं.

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादक का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

वीर निर्वाण संवत् 2552

इस अंक में

अपने धर्म को जानना -समझना, इस की जड़ों से जुड़ना -आज की सबसे बड़ी आवश्यकता	7
संभावित चातुर्मास 2026	9
श्रमण जैन परम्परा में चातुर्मास की अवधारणा	10
वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जैनधर्म और समाज : चुनौतियाँ, चिंतन और समाधान	19
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की दो दिवसीय बैठक संपन्न	23

महत्त्वपूर्ण सूचना: 'जैन तीर्थवंदना' मासिक का प्रकाशन यथावत् रहेगा

आदरणीय पाठकगण, सादर जय जिनेन्द्र।
आपको यह सूचित करते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की दिनांक 4 एवं 5 जुलाई को आयोजित राष्ट्रीय पदाधिकारी परिषद् की बैठक में, पाठकों के अपार समर्थन और पत्रिका की उपयोगिता को देखते हुए यह महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया है कि कमेटी का मुख अंक 'जैन तीर्थवंदना' मासिक पत्रिका का प्रकाशन बिना किसी बदलाव या अवरोध के यथावत् जारी रहेगा।
अतः आप सभी आदरणीय पाठकों से विनम्र निवेदन है कि यदि किन्हीं कारणों से आपको पत्रिका डाक द्वारा प्राप्त नहीं हो पा रही है, तो कृपया अपना नाम पता सुनिश्चित करने के लिए कमेटी कार्यालय, मुंबई को तुरंत सूचित करने का कष्ट करें।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के सदस्य बनकर तीर्थों के संरक्षण-संवर्धन और उनके विकास में मार्ग दर्शन दीजिये

संरक्षक सदस्य	रु. 5,00,000/-	सम्माननीय सदस्य	रु. 31,000/-
परम सम्माननीय सदस्य	रु. 1,00,000/-	आजीवन सदस्य	रु. 11,000/-

नोट:

1) कोई भी फर्म, पेढ़ी, कम्पनी, धर्मादाय ट्रस्ट, संयुक्त कुटुम्ब, सोसायटी भी उपर्युक्त प्रावधान के अंतर्गत सदस्य बन सकेंगे। इस प्रकार की सदस्यता केवल 25 वर्षों के लिये होगी।
2) जो सदस्य आयकर की छूट चाहेंगे उन्हें 80जी के अंतर्गत कुछ रकम पर 80जी का लाभ मिलेगा।
3) सदस्यता से प्राप्त राशि ध्रुवफण्ड में जमा रहेगी उसके ब्याज की आय ही व्यवस्थापन एवं तीर्थक्षेत्र के संरक्षण, संवर्धन तथा उनके जीर्णोद्धार में व्यय की जायेगी।

हंगामा खड़ा करना हमारा......

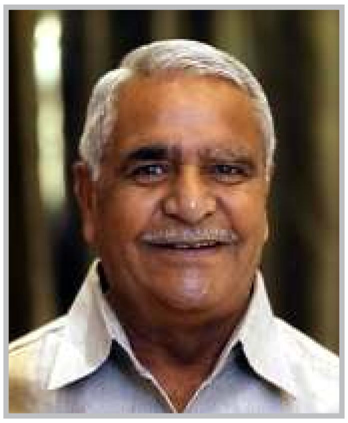

आप ठीक सोच रहे हैं,
हंगामा खड़ा करना हमारा मकसद नहीं,
परंतु तस्वीर बदलनी ही चाहिए।।

अपने अब तक के कार्यकाल में हमारी पुरजोर कोशिश रही है कि वर्तमान समस्याओं की जड़ तक पहुँच कर उनका स्थायी समाधान खोजा जाए। इसी क्रम में हमने तीर्थो पर प्रतिपक्षी बन्धुओं से चर्चा के द्वारा खुले रखकर सम्मानजनक समाधान प्राप्त करने का प्रयास किया है एवं आज भी कर रहे हैं।

दूसरी सबसे बड़ी शिकायत तीर्थों के विकास हेतु पर्याप्त धनराशि आवंटित न किये जाने के संबंध में रही है। इस संबंध मे मेरा स्पष्ट कहना है कि जब राशि होगी तभी तो बंटेगी। जितनी रहती थी उतनी बांटी गई अब ज्यादा रहेगी तो ज्यादा बंटेगी। आप सब मिलकर तीर्थक्षेत्र कमेटी की आय बढ़ाएं, मैं विश्वास दिलाता हूँ कि: –

1. मंदिर मंदिर गुल्लक योजना
2. तीर्थरक्षा कलश योजना

से प्राप्त होने वाली आय का 1–1 रुपया केवल तीर्थ विकास में ही खर्च होगा। इसमें अंचल अध्यक्षों की अनुशंसाओं को भी महत्व दिया जाएगा। जैन तीर्थ वन्दना का यह जुलाई अंक जब आपके हाथों में पहुँचेगा, तब तक सामान्यत: यत्र तत्र सर्वत्र वर्षायोग हेतु संतों का आगमन हो चुका होगा। कलश स्थापना की तिथियाँ तय हो गई होंगी। अत: तीर्थरक्षा कलश की स्थापना हेतु सक्रिय प्रयास तत्काल प्रारम्भ करें। कलश हेतु आप अंचल अध्यक्ष/महामंत्री जी अथवा गाजियाबाद कार्यालय पर सम्पर्क कर सकते हैं। मंदिर जी में गुल्लक हेतु आप अंचल अध्यक्ष/महामंत्री जी अथवा मंत्री श्री हसमुख जैन गाँधी से सम्पर्क करें।

शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष – भा. दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की स्थापना के 125 वर्ष पूर्ण होने पर आयोजित होने वाले वर्षपर्यन्त कार्यक्रमों का शुभारम्भ 21–22 अक्टूबर 26 को सिद्धक्षेत्र मथुरा–चौरासी से होना है। इसके लिए आवश्यक अर्थ संग्रह तीर्थ चक्रवर्ती योजना से किया जा रहा है। आप अंचल अध्यक्ष अथवा श्री जवाहरलाल जी जैन, चेयरमैन–शतकोत्तर रजत वर्ष समिति से इस सन्दर्भ में सम्पर्क कर अधिक से अधिक तीर्थ चक्रवर्ती बनाकर कमेटी को आर्थिक सुदृढ़ता प्रदान करने में अपना योगदान कर सकते हैं। तीर्थ चक्रवर्ती योजना से जुडने के लिए आप बैंक ऑफ इंडिया के खाता संख्या 00121010110008627 में अथवा क्यू आर कोड़ द्वारा राशि भिजवा कर निम्न नंबरों पर सूचित करें, 9958002782 मीनू जैन / पीयूष जैन गाजियाबाद।

मयूर पिच्छिका – दिगम्बर जैन संतों द्वारा मयूर पिच्छिका का उपयोग अनादिकाल से द्वारा संयम के उपकरण के रूप में किया जा रहा है। रात्रि विश्राम एवं आहारचर्या के समय भी

पिच्छिका उनके समीप (निकट) ही रहती है। इसका उपयोग संतगण सूक्ष्म जीवों की रक्षा के भाव से करते हैं। इसकी मृदुता, जलकण एवं धूलकणों को अवशोषित न करने का गुण एवं सूक्ष्म जीवों का अहिंसात्मक परिमार्जन करने की क्षमता के कारण ही इसे संयम का उपकरण बनाया गया है।

कृष्ण भक्तों द्वारा मुकुट में तथा इस्लामिक परम्परा में झाड़े हेतु इसका प्रयोग किया जाता है। बहुत से लोग सजावट एवं मयूर नृत्यों (लोक नृत्यों) में भी इसका उपयोग करते हैं किन्तु दिगम्बर जैन संतों की तो यह पहचान ही है। मोर प्रतिवर्ष वर्षाकाल के बाद एक स्वाभाविक प्रक्रिया के तहत अपने लगभग 200 छोटे-बड़े पंख छोड़ देता है जैसे सांप अपनी केचुली छोड़ता है, वृक्ष पतझड़ में पत्ते गिराते हैं वैसे ही मोर अपने पंख छोड़ देता है उसको नये पंख आ जाते हैं। यह नैसर्गिक प्रक्रिया है इसमें मयूर को कोई कष्ट नहीं होता है।

मोरों के निवास के समीप रहने वाले श्रावक श्रद्धा पूर्वक उन मोर पंखों को एकत्र कर उनको संघों में भेंट स्वरूप दे देते हैं। ब्रह्मचारीगण उनसे मयूर पिच्छिका बनाते हैं। यह भी एक कला है।

ये पिच्छिकायें ही वर्षायोग निष्ठापन के बाद पिच्छि परिवर्तन समारोह के मध्य पूज्य मुनिगण / आर्यिका माताओं को समर्पित की जाती हैं। इसमें हिंसा की कोई बात ही नहीं है। श्रीमती मेनका गांधी को इस नैसर्गिक प्रक्रिया की शायद जानकारी ही नहीं है। जैन मुनि अपनी साधना में हिंसा को कोई स्थान दे यह बात असंभव ही है।

एक तथ्य यह भी है विगत वर्षों में दि. जैन संतों की संख्या बढ़ी है तो राष्ट्रीय पक्षी मयूर की संख्या भी बढ़ी है। यदि उनकी हिंसा होती तो मयूरों की जनसंख्या कैसे बढ़ती? यह स्वाभाविक प्रश्न है। जैसे समाधि / संथारा को आत्महत्या बताना हास्यास्पद एवं तथ्यहीन था वैसे ही पिच्छी हेतु हिंसा को कारण मानना भी तथ्य हीन है।

किसी भी राजनेता को तथ्यविहीन आरोप नहीं लगाने चाहिए वरना यह तो हंगामा खड़ा करने की क्रिया हो जायेगी। मैं विश्वास पूर्वक कह सकता हूँ कि मयूर पिच्छी हेतु कभी किसी मोर कि हत्या नहीं कि जाती।

हम चाहते है कि श्रीमती मेनका गांधी तथ्यों के आलोक में अपने शब्दों को वापस लें एवं भविष्य में ऐसे अनर्गल आरोप न लगावें। जैन समाज उनके इस कथन का पुरजोर विरोध करती है।

पुनः: हमारी दृष्टि दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्रों की सुरक्षा, संरक्षण, संवर्द्धन एवं विकास के माध्यम से जैन धर्म की आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक विरासत को भावी पीढ़ियों तक सुरक्षित पहुंचाना तथा सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज को तीर्थक्षेत्र कमेटी से जोड़कर एक सक्षम राष्ट्रीय संगठन का निर्माण करना है। वर्षायोग इसके लिए सर्वाधिक उपयुक्त समय है। आज से ही हम पूज्य गुरुओं का आशीष लेकर इस ओर कार्य प्रारम्भ करें। सफलता की अग्रिम शुभकामनाओं सहित। समस्त मुनि आर्यिका संघों के चरणों में यथायोग्य नामोस्तु वंदामि सहित।

जम्बूप्रसाद जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष

प्रिय साधर्मी बंधुओं,

सादर जय जिनेंद्र।

श्रमण संस्कृति और हमारे पावन दिगंबर जैन तीर्थों के गौरवशाली इतिहास को जन-जन तक पहुँचाने वाली हमारी आधिकारिक मासिक पत्रिका **'जैन तीर्थवंदना'** के इस नवीन अंक के माध्यम से मैं आप सभी के समक्ष तीर्थ सुरक्षा की अद्यतन प्रगति और भविष्य के संकल्पों को साझा करते हुए अत्यंत हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ।

कृतज्ञता ज्ञापन और आतिथ्य का अभिनंदन:

सर्वप्रथम, विगत दिनों इंदौर के पावन परिवेश में आयोजित **भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की राष्ट्रीय पदाधिकारी परिषद बैठक** की अभूतपूर्व और ऐतिहासिक सफलता के लिए मैं हृदय की गहराइयों से आभार व्यक्त करता हूँ। इस दो-दिवसीय भव्य आयोजन को पूर्णतः सफल, अनुशासित और गरिमापूर्ण बनाने में **मध्यांचल महापरिवार**, स्थानीय **इंदौर जैन समाज** तथा अतिशय क्षेत्र **बनेड़िया जी तीर्थ** प्रबंध समिति ने जिस आतिथ्य सत्कार, अटूट समर्पण और उत्कृष्ट व्यवस्था का परिचय दिया है, वह अनुकरणीय है।

बैठक के उपरांत राष्ट्रीय पदाधिकारियों की विधिक और धार्मिक समीक्षा यात्रा के अंतर्गत हमें मंगलमय **सुमितिधाम तीर्थ** की वंदना करने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ। इसके साथ ही, अध्यात्म और अगाध आस्था के केंद्र **ग्रेटर बाबा (बड़ा बाबा) क्षेत्र तथा गोम्मटगिरि** की पावन धरा पर जाकर शीश नवाने महत्वपूर्ण अवसर मिला। तीर्थों का यह प्रत्यक्ष अवलोकन हमें उनकी सुरक्षा के प्रति और अधिक कटिबद्ध बनाता है। इस यात्रा में श्री मनीष गोधा, श्री मति सपना गोधा, श्री नरेन्द्र जी वेद एवं स्थानीय समाज के आत्मीय स्वागत से मन प्रफुल्लित है हम आपका पुनः हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करते हैं।

बंधुओं, वर्तमान समय में हमारे महातीर्थों की सुरक्षा के साथ-साथ हमारी सदियों पुरानी निर्दोष मुनि चर्या और धार्मिक उपकरणों के अस्तित्व को अक्षुण्ण रखना हमारा परम कर्तव्य है। इसी संदर्भ में, दिगंबर जैन साधु-संतों द्वारा धारण की जाने वाली मयूर-पिच्छी की धार्मिक, शास्त्रीय एवं विधिक मान्यता के संरक्षण तथा उससे संबंधित भ्रामक धारणाओं के स्थायी निराकरण हेतु संस्था की ओर से देश के **यशस्वी एवं लोकप्रिय प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेंद्र जी दामोदरदास जी मोदी** को दिनांक 09.07.2026 को एक अत्यंत महत्वपूर्ण एवं विस्तृत विधिक पत्र प्रेषित किया गया है।

इस आधिकारिक पत्र के माध्यम से केंद्र सरकार का ध्यान इस ओर आकर्षित किया गया है कि दिगंबर मुनि परंपरा में प्रयुक्त मयूर-पिच्छी पूर्णतः अहिंसक है, जिसमें केवल मोर द्वारा प्राकृतिक रूप से त्यागे गए पंखों का ही उपयोग किया जाता है। अतः भारत के संविधान के अनुच्छेद 25 एवं 26 के अंतर्गत प्राप्त मौलिक अधिकारों के तहत इस प्राचीन अहिंसक धार्मिक परंपरा को पूर्ण विधिक संरक्षण प्रदान करने और वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम के संदर्भ में फैली भ्रांतियों को दूर करने हेतु एक तथ्यात्मक मार्गदर्शिका जारी करने का पुरजोर आग्रह किया गया है।

इसी क्रम में, मैं देश भर के साधर्मी बंधुओं को एक अत्यंत महत्वपूर्ण और हर्षवर्धक विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि **हमारी आधिकारिक मासिक पत्रिका 'जैन तीर्थवंदना' का प्रकाशन बंद नहीं होगा।** पदाधिकारी परिषद की बैठक में लिए गए नीतिगत निर्णय लिया गया जिससे पत्रिका के प्रकाशन को और अधिक सुदृढ़, नियमित और व्यापक बनाना है। यह पत्रिका जैन संस्कृति के प्रचार-प्रसार तथा तीर्थों की जानकारी जन-जन तक पहुँचाने का एक सशक्त व अक्षुण्ण माध्यम है।

बंधुओं, आगामी माह से पावन श्रमण संस्कृति के सर्वोपरि आत्म-साधना के महापर्व 'चातुर्मास' का शुभारंभ होने जा रहा है। यह वह मंगलमयी कालखंड होता है जब पूज्य दिगंबर साधु-संतों के चरण एक स्थान पर थिरकते हैं और संपूर्ण धरा धर्म-ध्यान, संयम व अहिंसा के अमृत रस से सराबोर हो जाती है। इस वर्ष का यह चातुर्मास केवल व्यक्तिगत आत्म-कल्याण का माध्यम न बने, अपितु हमारे अनादि-निधन सिद्धक्षेत्रों और पूज्य मुनिराजों की निर्दोष चर्या के संरक्षण का एक युगांतरकारी अभियान सिद्ध हो, इसी मंगल भावना के साथ तीर्थक्षेत्र कमेटी संपूर्ण भारतवर्ष में **'तीर्थ रक्षा कलश'** महाअभियान का शंखनाद कर रही है। मेरा अनुरोध है कि चातुर्मास के अवसर पर चातुर्मास कलश स्थापना के साथ-साथ एक कलश तीर्थरक्षा कलश के नाम से स्थापित करवाएं जिसकी राशी भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी तक पहुंचाएं और तीर्थों की रक्षा में अपनी भागीदारी करें! आइए, हम सब मिलकर अपने पूर्वजों की इस पावन धरोहर, हमारे सिद्धक्षेत्रों की पवित्रता और श्रमण संस्कृति की पताका को अक्षुण्ण रखने का दृढ़ संकल्प लें।

चातुर्मास की इसी पावन बेला में इस राष्ट्रव्यापी महाअभियान को शत-प्रतिशत सफल बनाने हेतु मैं देश के प्रत्येक दिगंबर जैन मंदिर, हर स्थानीय समाज, महिला मंडल, युवा संगठन और प्रत्येक धर्मावलंबी परिवार से इस 'तीर्थ रक्षा कलश' योजना से सक्रिय रूप से जुड़ने का पुरजोर आह्वान करता हूँ।

तीर्थ रक्षा, धर्म रक्षा।

संतोष जैन (पेंढारी)
राष्ट्रीय महामंत्री

दिगम्बर जैन साधुओं की मयूर-पिच्छी के संरक्षण और भ्रांतियों के निवारण हेतु तीर्थक्षेत्र कमेटी ने प्रधानमंत्री को लिखा पत्र

भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

Bharatvarshiya Digambar Jain Tirthkshetra Committee

प्रति, दिनांक ०९.०७.२०२६

माननीय श्री नरेन्द्रजी दामोदरदासजी मोदी
यशस्वी एवं लोकप्रिय प्रधानमंत्री, भारत सरकार,
प्रधानमंत्री कार्यालय, साउथ ब्लॉक, नई दिल्ली - ११००११

विषय : दिगम्बर जैन साधु-संतों द्वारा धारण की जाने वाली मयूर-पिच्छी की धार्मिक, शास्त्रीय एवं विधिक मान्यता के संरक्षण तथा उससे संबंधित भ्रांतियों के निराकरण के संबंध में।

नागपुर से संतोष जैन का सादर प्रणाम !

माननीय प्रधानमंत्री जी,

सविनय निवेदन है कि भारत की प्राचीन आध्यात्मिक परम्पराओं में दिगम्बर जैन साधु संतों का जीवन अहिंसा, अपरिग्रह, संयम एवं समस्त जीव-जगत के प्रति करुणा का सर्वोच्च आदर्श प्रस्तुत करता है। दिगम्बर जैन साधुओं द्वारा धारण की जाने वाली मयूर पिच्छी इसी महान अहिंसक जीवन दर्शन का अभिन्न एवं शास्त्रसम्मत अंग है। यह मात्र एक धार्मिक उपकरण नहीं, अपितु जीव-दया, पर्यावरण संरक्षण तथा भारतीय सांस्कृतिक विरासत का जीवंत प्रतीक है।

दिगम्बर जैन साधु पूर्ण दिगम्बर व्रत का पालन करते हुए अत्यन्त तपस्वी एवं संयममय जीवन व्यतीत करते हैं। वे किसी भी प्रकार की हिंसा से बचने के लिए अत्यधिक सावधानी रखते हैं। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु मयूर-पिच्छी का उपयोग किया जाता है। साधु जब किसी स्थान पर विराजमान होते हैं अथवा विहार करते हैं, तब वे पिच्छी द्वारा अत्यन्त कोमलता से भूमि अथवा आसन को स्पर्श करते हैं, जिससे वहाँ विद्यमान सूक्ष्म जीवों की रक्षा हो सके तथा अनजाने में भी किसी प्रकार की हिंसा न हो। यह सम्पूर्ण विश्व के समक्ष अहिंसा के सर्वोच्च आदर्श का अनुपम उदाहरण है।

वैज्ञानिक दृष्टि से भी मयूर-पंख अत्यन्त कोमल, हल्के एवं स्वच्छ होते हैं। उनमें धूल अथवा पसीना सामान्यतः नहीं चिपकता, जिससे स्वच्छता एवं स्वास्थ्य की दृष्टि से भी उनका उपयोग उपयुक्त माना जाता है।

भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

Bharatvarshiya Digambar Jain Tirthkshetra Committee

सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि दिगम्बर जैन परम्परा में प्रयुक्त मयूर-पिच्छी के लिए किसी भी मोर को न तो पकड़ा जाता है, न उसके पंख बलपूर्वक निकाले जाते हैं और न ही किसी प्रकार की हिंसा की जाती है। केवल वे पंख उपयोग में लाए जाते हैं जिन्हें मोर अपने प्राकृतिक जीवन-चक्र के दौरान स्वयं त्याग देता है। अतः इस परम्परा में किसी भी वन्यजीव के प्रति क्रूरता अथवा शोषण का कोई प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता।

भारत का संविधान प्रत्येक नागरिक को धर्म का स्वतंत्रतापूर्वक पालन, आचरण एवं प्रचार करने का तथा धार्मिक सम्प्रदायों को अपने धार्मिक कार्यों के संचालन का मौलिक अधिकार प्रदान करता है। दिगम्बर जैन साधुओं द्वारा मयूर-पिच्छी धारण करना इन संवैधानिक अधिकारों के अंतर्गत संरक्षित एक प्राचीन एवं अनिवार्य धार्मिक परम्परा है।

इसी प्रकार, वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 का उद्देश्य वन्यजीवों की रक्षा करना तथा उनके प्रति क्रूरता एवं अवैध व्यापार को रोकना है। दिगम्बर जैन परम्परा इस अधिनियम की भावना के पूर्णतः अनुरूप है, क्योंकि इसमें किसी भी जीव को हानि पहुँचाकर पंख प्राप्त करने की अनुमति नहीं है। यदि कहीं किसी व्यक्ति द्वारा वन्यजीव संरक्षण कानून का उल्लंघन किया जाता है, तो उसके विरुद्ध विधिसम्मत कार्रवाई होना आवश्यक है; किन्तु ऐसे किसी अवैध कृत्य को दिगम्बर जैन साधु-संतों की शताब्दियों पुरानी अहिंसक धार्मिक परम्परा से जोड़ना न तो तथ्यसम्मत है और न ही न्यायोचित।

माननीय उच्चतम न्यायालय ने समय-समय पर अपने विभिन्न निर्णयों में यह प्रतिपादित किया है कि संविधान के अनुच्छेद 25 एवं 26 के अंतर्गत धार्मिक आस्थाओं एवं परम्पराओं का संरक्षण लोकतांत्रिक व्यवस्था का अभिन्न अंग है तथा राज्य का दायित्व है कि वह सभी धर्मों के प्रति समान सम्मान एवं निष्पक्षता का व्यवहार सुनिश्चित करे।

अतः आपसे विनम्र प्रार्थना है कि—

1. दिगम्बर जैन साधुओं द्वारा धारण की जाने वाली मयूर-पिच्छी के संबंध में फैलाई जा रही भ्रामक एवं तथ्यहीन धारणाओं का अधिकृत स्तर पर तथ्यपरक निराकरण कराया जाए।

2. केन्द्र एवं राज्य सरकारों के संबंधित विभागों को यह स्पष्ट करने हेतु आवश्यक दिशा-निर्देश जारी किए जाएँ कि दिगम्बर जैन साधुओं की पारम्परिक मयूर-पिच्छी, जिसमें केवल प्राकृतिक रूप से गिरे हुए पंखों का उपयोग होता है, भारत की प्राचीन अहिंसक धार्मिक परम्परा का अंग है।

भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

Bharatvarshiya Digambar Jain Tirthkshetra Committee

3. यह सुनिश्चित किया जाए कि भविष्य में किसी भी व्यक्ति, संस्था अथवा मंच द्वारा बिना तथ्यात्मक एवं विधिक आधार के दिगम्बर जैन साधु-संतों की इस पवित्र परम्परा के संबंध में भ्रामक एवं धार्मिक भावनाओं को आहत करने वाले वक्तव्य न दिए जाएँ।

4. भारत सरकार जैन समाज, वन्यजीव विशेषज्ञों तथा विधि विशेषज्ञों के साथ समन्वय स्थापित कर इस विषय पर तथ्यात्मक मार्गदर्शिका जारी करने पर विचार करे, जिससे समाज में भ्रम की स्थिति समाप्त हो सके।

माननीय प्रधानमंत्री जी, आपके नेतृत्व में भारत ने अपनी प्राचीन सांस्कृतिक विरासत, धार्मिक सहिष्णुता एवं "सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास" की भावना को सुदृढ़ किया है। हमें पूर्ण विश्वास है कि करोड़ों जैन श्रद्धालुओं की इस न्यायोचित एवं संवैधानिक भावना का सम्मान करते हुए इस विषय में आवश्यक संरक्षण एवं मार्गदर्शन प्रदान किया जाएगा।

आपका शुभेच्छु

संतोष जैन (पेंढारी)
राष्ट्रीय महामंत्री - भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, मुंबई
Mob. : 9822225911, Email : jainacid77@gmail.com

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से जैन साधु-संतों की अनिवार्य धार्मिक चर्या और देश की प्राचीन अहिंसक परंपराओं के संरक्षण के लिए एक बड़ा ऐतिहासिक कदम उठाया गया है। तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष जैन (पेंढारी), नागपुर ने देश के यशस्वी प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी को एक विस्तृत पत्र प्रेषित कर दिगम्बर जैन साधुओं द्वारा धारण की जाने वाली 'मयूर-पिच्छी' की धार्मिक, शास्त्रीय एवं विधिक मान्यता के संरक्षण और इसके संबंध में फैलाई जा रही भ्रामक व तथ्यहीन धारणाओं के अधिकृत निराकरण की मांग की है। पत्र में स्पष्ट किया गया है कि जैन संतों का जीवन पूर्णतः अहिंसक और जीव-दया पर आधारित होता है तथा इस पिच्छी के निर्माण के लिए किसी भी मोर को कोई हानि नहीं पहुँचाई जाती, बल्कि मोर द्वारा प्राकृतिक रूप से त्यागे गए पंखों को ही अत्यंत कोमलता से सूक्ष्म जीवों की रक्षा हेतु उपयोग में लाया जाता है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी मयूर-पंखों को स्वच्छ और धूल-पसीने से मुक्त रहने के कारण उपयुक्त माना गया है।

महामंत्री श्री संतोष जैन ने रेखांकित किया कि भारतीय संविधान के अनुच्छेद 25 और 26 के तहत यह प्राचीन परंपरा मौलिक अधिकारों के अंतर्गत संरक्षित है, साथ ही यह वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 की मूल भावना के भी पूरी तरह अनुकूल है क्योंकि इसमें वन्यजीवों के प्रति किसी भी प्रकार की क्रूरता का कोई स्थान नहीं है। पत्र के माध्यम से प्रधानमंत्री कार्यालय से चार मुख्य प्रार्थनाएं की गई हैं, जिनमें सरकारी स्तर पर भ्रांतियों का खंडन करने, वन विभाग एवं संबंधित सरकारी निकायों को आवश्यक दिशा-निर्देश जारी करने, बिना तथ्यात्मक आधार के जैन संतों की पवित्र चर्या पर भ्रामक वक्तव्य देकर धार्मिक भावनाएं आहत करने वालों पर रोक लगाने तथा वन्यजीव व विधि विशेषज्ञों के समन्वय से एक आधिकारिक गाइडलाइन जारी करने का आग्रह शामिल है। प्रधानमंत्री जी के "सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास" के मूल मंत्र पर आस्था जताते हुए कमेटी ने करोड़ों जैन श्रद्धालुओं की इस न्यायोचित मांग पर सरकार से त्वरित व सकारात्मक मार्गदर्शन प्रदान करने की अपील की है।

अपने धर्म को जानना -समझना, इस की जड़ों से जुड़ना -आज की सबसे बड़ी आवश्यकता

-डॉ. अरिहंत कुमार जैन, मुंबई

आज के समय में एक गंभीर और चिंताजनक स्थिति हम सभी के सामने खड़ी है। अधिकांश जैनी अपनी ही धर्म की मूलभूत सामान्य ज्ञान या जानकारी से काफी हद तक अनभिज्ञ होते जा रहे हैं। महान ग्रंथों, उनके नामों, इनके लेखक आचार्यों के बारे में सामान्य जानकारी भी बहुत कम लोगों को है। जैन समाज में भी आगम, तीर्थंकरों के नाम, उनका जीवनपरिचय, जैन धर्म के कुछ सिद्धांत, इतिहास जैसे महत्वपूर्ण विषय नई पीढ़ी के लिए बिलकुल अपरिचित बनते जा रहे हैं।अपने धर्म के मूल सिद्धांतों और इतिहास की जानकारी सीमित होती जा रही है। अधिकांश लोगों को केवल पर्वों की जानकारी होती है, वह भी इसलिए क्योंकि उन दिनों व्यापारिक संस्थान और सरकारी कार्यालय बंद रहते हैं। यदि अवकाश न हो, तो बहुत से लोग उन पर्वों से भी अनजान रह जाते हैं। यह स्थिति केवल जानकारी की कमी नहीं, बल्कि अपने मूल से धीरे-धीरे दूर होने का संकेत है।

एक साक्षात्कार में एक मौलवी साहब ने यह बात कही कि इस्लाम धर्म को मानने वाला हर व्यक्ति कुरान की कुछ न कुछ आयतों और अन्य जानकारी से अवश्य परिचित होता है। और अपने धर्म के प्रति बहुत कट्टर होता है . किन्तु जैनी इतना कच्चा क्यों होता है? कि वह यहाँ वहां, सभी को मानने लगता है. इनके सामने वह इतना तक उदार हो जाता है कि वह मिथ्यात्व की ओर बढ़कर अपने धर्म को भी धीरे धीरे भुला कर, उसे मानना छोड़ देता है.यह बात हमें सोचने पर मजबूर करती है कि क्या हम अपने धर्म के प्रति उतने ही सजग और जागरूक हैं? क्या हम अपनी आने वाली पीढ़ी या अपनी संतान को क्या हम अपने धर्म की मूल बातों और शिक्षाओं से जोड़ पा रहे हैं? वास्तव में, धर्म केवल पूजा-पद्धति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जीवन जीने की कला, नैतिकता और संस्कारों का आधार है। यदि हमारी नई पीढ़ी इनमूल्यों से अनभिज्ञ रह जाएगी, तो वे अपनी सांस्कृतिक **पहचान** और धर्म को कैसे समझ पाएंगे? इसलिए यह अत्यंत आवश्यक है कि हम अपने घरों में, परिवारों में और समाज में धर्म की प्राथमिक जानकारी को सहज और सरल रूप में साझा करें।समझाये, पाठ शाला भेजे.

हमें यह समझना होगा कि धर्म का ज्ञान किसी पर अहसान का विषय नहीं, बल्कि प्रेरणा और संवाद का विषय है। यदि हम स्वयं अपने ग्रंथों, परंपराओं और आदर्शों को जानेंगे और उन्हें जीवन में उतारेंगे , तो नई पीढ़ी स्वतः ही उससे जुड़ने लगेगी। छोटे-छोटे प्रयास जैसे प्रतिदिन एक, श्लोक, प्राकृत आगमों की एक गाथा या उनका मंगलाचरण, कोई एक प्रेरक कथा या एक प्रसंग साझा करना,उन्हें बताए तब बच्चों के मन में गहरी छाप छोड़ सकता है।आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने व्यस्त जीवन में से थोड़ा समय निकालकर आत्मचिंतन करें और यह विचार करें कि कहीं हमअपने धर्म को भूलते तो नहीं जा रहे हैं? ऐसे में हमारा यह सबसे उत्कृष्ट और करोड़ों वर्षो से चला आ रहा धर्म आगे कैसे चलेगा?सोचो हम अपने धर्म और संस्कृति के संरक्षण में क्या योगदान दे रहे हैं।

यदि हर व्यक्ति हर परिवार यह संकल्प ले कि वह अपने बच्चों को अपने धर्म की मूल बातें अवश्य सिखाएगा, तो यह एक बड़ा सकारात्मक परिवर्तन ला सकता है। धर्म की जड़ों से जुड़ना केवल परंपरा निभाना नहीं, बल्कि अपने अस्तित्व को समझना है। आइए, हम सभी इस दिशा में एक छोटा लेकिन सार्थक कदम उठाएं और अपनी आने वाली पीढ़ी को ज्ञान, संस्कार और *पहचान की अमूल्य धरोहर सौंपें।

शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष एवं वर्षायोग

भा. दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की इन्दौर में सम्पन्न पदाधिकारी परिषद की बैठक 4–5 जुलाई 26 में अन्य अनेक निर्णयों के साथ यह भी निर्णय लिया गया कि वर्ष 2027 के अन्त तक आपकी जैन तीर्थ वन्दना का वर्तमान रूप में प्रकाशन नियमित रखा जाये। इसके साथ ही e-magazine के रूप में भी इसका व्यापक प्रचार-प्रसार किया जाये। एतदर्थ उपलब्ध पत्रों एवं उनके व्हाट्सएप नं. का संशोधन एवं प्रमाणीकरण जरूरी है। सभी अंचल अपने-अपने अंचल के सदस्यों के पत्रों को यदि केन्द्रीय कार्यालय के सहयोग से संशोधित कर देंगे तो समस्या का समाधान हो सकता है। कुछ भी हो, कैसे भी हो, कार्यालय से हो या एजेंसी से हो ? हमें अपना डाटा बेस तो ठीक करना ही होगा। सभी योजनाओं की सफलता में इस डाटा बेस की अहम भूमिका रहेगी।

तीर्थ रक्षा कलश: — हम चाहते हैं कि जहाँ-जहाँ तीर्थरक्षा कलश की स्थापना हो वहाँ के सचित्र समाचार जैन तीर्थ वन्दना में प्रकाशनार्थ प्राप्त हो। इससे जहाँ प्रभावना होगी वहीं हमारे आंचलिक कार्यकर्ताओं की मेहनत भी सामने आयेगी। हम सचित्र समाचार प्रकाशित करने का प्रयास करेंगे किन्तु चित्रों में सम्बद्ध संत, कलश का चित्र एवं बोली लेने वाले महानुभाव तीनों हों अथवा समाचार में उक्त नामों का उल्लेख हो।

गतवर्ष आचार्य श्री सुनीलसागर जी (अहमदाबाद), अन्तर्मना आचार्य श्री प्रसन्नसागर जी (तरुण सागरम), आचार्य श्री विमर्षसागर जी (सहारनपुर) आचार्य श्री वसुनन्दि जी (अहिच्छत्र), मुनि श्री विशमसागर जी एवं मुनि श्री विष्णुसागर जी (शामली) आदि ने तीर्थरक्षा कलश रखवाये थे तथा कलश स्थापना से लगभग 24,00,000=00 की आय तीर्थक्षेत्र कमेटी को हुई थी। स्थानीय व्यवस्था या साधु की परम्परा के तहत यदि किसी स्थान पर तीर्थरक्षा कलश की वर्षायोग स्थापना के समय स्थापना न हो सके तो मोक्ष-सप्तमी आदि पर्वों पर भी की जा सकती है। हमारा उद्देश्य इस निमित्त से पूज्य संतों का तीर्थक्षेत्र कमेटी हेतु आशीर्वाद प्राप्त करना एवं कमेटी की आय बढ़ाना है।

जैन तीर्थ वन्दना का विशेषांक: — भा. दि. जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी द्वारा शतकोत्तर रजत स्थापना जयन्ती वर्ष के शुभारम्भ अवसर पर जैन तीर्थ वन्दना का विशेषांक अक्टूबर 26 में निकालने की योजना है एतदर्थ प्रासंगिक सामग्री भिजवाने का आप सभी महानुभावों से अनुरोध है विशेष रूप से विगत 125 वर्षों के अविस्मरणीय प्रसंगों/संस्मरणों को हम संकलित करना चाहेंगे। हम अपने पाठकों से अनुरोध करते हैं कि:

- तीर्थों की रक्षा या विकास के कार्यों से सम्बन्धित कोई संस्मरण/घटना यदि आपके स्मरण में आ रही हो तो कृपया हमें भेजें। साथ में अपना चित्र भी भेजें।

- तीर्थों के प्रति समर्पित किसी व्यक्तित्व का जीवन एवं उनके कार्यों का विवरण भिजवायें।

- यदि किसी तीर्थ की यात्रा के निमित्त से आपके जीवन में कोई बड़ा बदलाव आ गया हो अथवा तीर्थ आपके जीवन की दिशा बदलने का कारण बन गया हो तो उसका सचित्र सविस्तार विवरण भेजें। इस प्रकार के विवरण इतिहास बनाते हैं।

हम अपने सम्पादक मण्डल के सभी माननीय सदस्यों से अनुरोध करते हैं कि आप अपनी क्षमताओं का उपयोग करते हुए आगामी विशेषांक को ऐसा गुलदस्ता बनायें कि लोग इसे वर्षों तक सहज कर रखें। तीर्थक्षेत्र कमेटी की पदाधिकारी परिषद के सभी सदस्यों से भी हमारा निवेदन है कि आप तो तीर्थों से सक्रियता से जुड़े हैं। जब तीर्थों की रक्षा एवं विकास का दायित्व समाज ने आपको ही दिया है तो एतदर्थ जनजागृति लाने में भी आपको नेतृत्व करना होगा। मैं स्वयं एवं मेरा सम्पादक मण्डल आपके साथ है।

कृपया इस हेतु कुछ ऐसा लिखकर भेजें जो हर तीर्थभक्त जानना चाहें। तीर्थों के अतिशय एवं व्यवस्थाओं से जुड़े शताधिक प्रसंग है वे कब, कहाँ छपेंगे? समय के साथ वे स्मृति के गर्त में विलीन हो जायेंगे किन्तु ऐसा होने से पहले हम उसे आपके माध्यम से सुरक्षित कर लेना चाहते हैं। भाषा की परिष्कृतता या भाषागत व्याकरणिक दोषों पर ध्यान न दे वह ठीक करना हमारी टीम का

काम है। आप भाव एवं तथ्य दें, शब्द हमारी टीम दे देंगी।

मैं जब तीर्थयात्रा पर जाता हूँ तब लगभग हर तीर्थ पर कोई न कोई ऐसा फोल्डर, बुकलेट या इतिहास की पुस्तक देखने में आती है जिसमें उस क्षेत्र का शिल्प सौन्दर्य या अतिशय या इतिहास के बारे में अनूठी जानकारी होती है। क्षेत्र के व्यवस्थापकों अथवा पदाधिकारियों का यह दायित्व है कि हमें अपने-अपने क्षेत्र के बारे में कुछ ऐसा लिखकर भेजें जो अनूठा हो। हमारे साधर्मी बन्धुओं/बहनों अथवा जैनेतर समाज में हमारे तीर्थों के प्रति श्रद्धा या आकर्षण बढ़े तभी तो हमारी शान बढ़ेगी।

उद्घाटन अवसर (२१ .१०.२६) पर प्रकाशित होने वाले विशेषांक में हर अंचल का कम से कम एक तीर्थ तो हो, ऐसा हम चाहते हैं। अन्य प्रकाशन योजनाओं पर भी हम काम कर रहे हैं। शनैः शनैः सबके विवरण आपके सामने आयेगें।

निबन्ध/व्यवहारिक सुझाव प्रतियोगिता : — इन पृष्ठों पर लेखनी को विराम देने से पूर्व हम आपका ध्यान निबन्ध प्रतियोगिता की ओर आकृष्ट करना चाहते हैं। बाक्स में हमने विज्ञप्ति पृष्ठ २८ पर प्रकाशित की है। अनेक विद्वानों एवं युवा चिन्तकों के अनुरोध पर हमने **अन्तिम तिथि 30.09.26** तक बढ़ा दी है। कृपया अन्तिम तिथि की प्रतीक्षा न करें एवं अपना लेख (पात्रतानुसार) हमें तत्काल भेज दें। क्योंकि 30.09.26 की रात्रि में हम प्रविष्टि लेना बन्द कर देंगे एवं उद्घाटन समारोह के पूर्व प्रकाश्य विशेषांक में परिणाम प्रकाशित कर देंगे। आप ज्यादा से ज्यादा भाई/बहनों को प्रविष्टि भेजने हेतु प्रेरित करें।

वर्षायोग में पधारे संतों के चरणों में बैठकर आत्मकल्याण करें इन्हीं मंगल भावनाओं के साथ।

डॉ. अनुपम जैन,
ज्ञानछाया, डी-14, सुदामानगर, इन्दौर-452 009 (म.प्र.)
मो.: 94250 53822

संभावित चातुर्मास 2026

आचार्य श्री सुनीलसागर जी-इंदौर
मुनिश्री नियम सागर जी-पुणे
मुनिश्री प्रमाण सागर जी-गुणायतन
मुनिश्री अभय सागर जी-सागर
मुनिश्री निर्वेग सागर जी-लखनादौन
मुनिश्री प्रसाद सागर जी-अकलतरा
मुनिश्री अक्षय सागर जी-पुणे
मुनिश्री प्रबोध सागर जी-खुरई
मुनिश्री प्रयोग सागर जी-गंज बासौदा
मुनिश्री निर्णय सागर जी-विदिशा
मुनिश्री वृषभ सागर जी-पुणे
मुनिश्री अजित सागर जी-पुणे
मुनिश्री संभव सागर जी-गुना
मुनिश्री श्रेयांश सागर जी-बीना
मुनिश्री वीर सागर जी-बैंगलोर
मुनिश्री विशद सागर जी-ललितपुर
मुनिश्री विराट सागर जी-बालाघाट

मुनिश्री महा सागर जी-गैरतगंज
मुनिश्री दुर्लभ सागर जी-पिपरई
मुनिश्री विनम्र सागर जी-दिल्ली
मुनिश्री निर्दोष सागर जी-पनागर
मुनिश्री निरोग सागर जी-बंधा
मुनिश्री निष्पक्ष सागर जी-अजमेर
मुनिश्री निष्कम्प सागर जी-जबलपुर
मुनिश्री निरापद सागर जी-मुंगावली
मुनिश्री निराकुल सागर जी-उस्मानाबाद
मुनिश्री नीरज सागर जी-मड़ावरा
मुनिश्री श्रमण सागर जी-राघौगढ़
मुनिश्री निराकार सागर जी-अमरावती
मुनि श्री निरंजन सागर जी-अशोकनगर
मुनि श्री अरह सागर जी महाराज-उदयपुर

आर्यिका ऋजुमति जी-बुढ़ार
आर्यिका श्री ज्ञानमति माताजी-अयोध्याजी
आर्यिका तपोमति जी-डोंगरगांव
आर्यिका गुणमति जी-छिंदवाड़ा
आर्यिका प्रशांतमति जी-तेंदूखेड़ा
आर्यिका पूर्णमति जी-देहरादून
आर्यिका अनंतमति जी-कोतमा
आर्यिका विमलमति जी-पिंडरई
आर्यिका वैराग्यमति जी-गौरझामर
आर्यिका दुर्लभमति जी-बंडा
आर्यिका अपूर्वमति जी-चंदेरी
आर्यिका सूत्रमति जी-सिहोरा
आर्यिका सिद्धांतमति जी-वारा सिवनी
आर्यिका विज्ञानमति जी-गोटेगांव
आर्यिका विलक्षणा मति जी-बरगी
आर्यिका धारणामति जी बरेला

श्रमण जैन परम्परा में चातुर्मास की अवधारणा

-प्रो. फूलचन्द जैन प्रेमी, वाराणसी

अपने भारत देश में वैदिक एवं श्रमण – ये दोनों संस्कृतियाँ प्राचीन काल से ही समृद्ध रही हैं, और इन दोनों में ही चातुर्मास का अत्यधिक महत्त्व है। श्रमण जैन परंपरा में तो चातुर्मास को चार मास के लंबे महापर्व के रूप में आयोजित किए जाने का विधान हैं। वर्षाकाल के आरंभ से ही चार माह के लिए एक ही स्थान पर लंबे प्रवास में साधु-साध्वियों के ज्ञान, ध्यान और संयम साधना का लाभ समाज को प्राप्त होता है। चौबीसवें एवं अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर के अनेक चातुर्मास का विवरण हमें श्वे. जैनागमों से प्राप्त होता है। इस चातुर्मास काल में आष्टान्हिक पर्व, रक्षाबंधन, पर्युषण-दशलक्षण सांवत्सरिक महापर्व, क्षमावाणी तथा तीर्थंकरों के पञ्च कल्याणकों जैसे अनेक पर्व भी मनाए जाते हैं।

वस्तुतः यत्र-तत्र गमनागमन रूप विहारचर्या श्रमण जीवन की एक अनिवार्य एवं महत्त्वपूर्ण चर्या है। इसीलिए श्रमण को अनियत विहारी कहा जाता है। क्योंकि उत्तराध्ययन सूत्र (४/६) में कहा है कि "भारण्ड-पक्खीव चारेऽप्पमत्तो" – अर्थात् श्रमण को भारण्ड पक्षी की तरह ग्रामानुग्राम आदि क्षेत्रों में अनासक्त भाव से निरंतर विचरण करते हुए अपनी साधना में लीन रहना चाहिए। इससे सम्यग्दर्शन की शुद्धि, स्थितिकरण, रत्नत्रय की भावना, शास्त्राभ्यास, शास्त्र कौशल, तीर्थ क्षेत्रों की वंदना के साथ ही आवश्यकतानुसार समाधिमरण के योग्य क्षेत्रों का अन्वेषण जैसे सहज लाभ इस अनियत विहारचर्या से प्राप्त हो जाते हैं। किन्तु वर्षाकाल के चातुर्मास में चार माह तक निरंतर एक स्थान पर प्रवास करने का भी शास्त्रीय प्रावधान है।

चातुर्मास की अवधारणा - श्रमण जैन परम्परा में चातुर्मास अर्थात् वर्षावास, जैन मुनिचर्या का आचारगत अनिवार्य और महत्त्वपूर्ण योग है। इसे वर्षायोग,वर्षावास अथवा चातुर्मास भी कहा जाता है। श्रमण के आचेलक्य आदि दस स्थितिकल्पों में अन्तिम पर्युषणा कल्प है। जिसके अनुसार वर्षा काल के चार महीने भ्रमण अर्थात् आवागमन,विहार आदिका त्याग करके एक स्थान पर रहने का विधान है। वर्ष के बारह महीनों को मौसम की दृष्टि से प्रमुख तीन भागों में विभाजित किया गया है

ग्रीष्म– चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ और आषाढ़।

वर्षा – श्रावण, भाद्रपद, आश्विन तथा कार्तिक।

शीत –मार्गशीर्ष, पौष, माघ तथा फाल्गुन।

यद्यपि ये तीनों ही विभाजन चार-चार माह के हैं, किन्तु वर्षाकाल के चार महीनों का एकत्र नाम चातुर्मास, वर्षावास आदि रूप में प्रसिद्ध है। श्वेताम्बर जैन आगम परम्परा में "पर्युषणा कल्प" नाम से वर्षावास का वर्णन प्राप्त होता है। बृहत्कल्पभाष्य में इसे 'संवत्सर' कहा गया है।वस्तुतःवर्तमान युग में पर्यावरण बहुत कुछ बदल गया है। अब न तो वर्षाकाल में पूरी तरह वर्षा का भरोसा रहता है,न शीतकाल में भरपूर ठण्ड का और न इसी तरह अन्य ऋतुओं का।

वर्तमान युग में तो गर्मी के बढ़ते प्रकोप से सभी त्रस्त रहते हैं। पर्यावरण प्रदूषण का असर सर्वत्र देखा जा सकता है। किन्तु अब से सात – आठ दशक पूर्व तक ऐसी स्थिति नहीं थी। पहले आवागमन के आज जैसे साधन भी नहीं थे। बड़ी-बड़ी सड़कों का जाल नहीं था। वर्षाकाल में प्रायः सदा आकाश मण्डल में घटाएं छायी रहती थीं तथा प्रायः वर्षा भी निरन्तर होती रहती थी।अतः वर्षाकाल में यत्र-तत्र भ्रमण या विहार के मार्ग रुक जाते हैं, नदी, नाले उमड़ पड़ते हैं। वनस्पतिकाय आदि हरित्काय मार्गों और मैदानों में फैल जाती है। सूक्ष्म-स्थूल जीव-जन्तु उत्पन्न हो जाते हैं। अतः छोटे -बड़े किसी भी प्रकार के जीवों को हमारे चलने फिरने से कष्ट न पहुंचे,उनकी विराधना और आत्म विराधना (घात) से बचने के लिए श्रमण धर्म आचार में वर्षा काल में वर्षायोग धारण, इस चातुर्मास में एकत्र-वास का विधान किया गया है। यही समय एक स्थान पर स्थिर रहने का सबसे उत्कृष्ट समय होता है। श्रमण और श्रावक-दोनों के लिए इस चातुर्मास का धार्मिक तथा आध्यात्मिक और संयम साधना के विकास की दृष्टि से सर्वाधिक महत्त्व है। इसीलिए श्रमण या उनके संघ के चातुर्मास (वर्षा योग) को श्रावक उसी प्रकार प्रिय और हितकारी अनुभव करते हैं, जिस प्रकार चकवा चन्द्रोदय को, कमल सूर्य को और मयूर मेघोदय को।

चातुर्मास का औचित्य– अपराजितसूरि ने भगवती आराधना की विजयोदया टीका में कहा है कि वर्षाकाल में स्थावर और जंगम सभी प्रकार के जीवों से यह पृथ्वी व्याप्त रहती है। उस समय भ्रमण करने पर महान् असंयम होता है। वर्षा और शीत वायु (झंझावात) से आत्मा की विराधना होती है। वापी आदि विविध जलाशयों में गिरने का भय रहता है। जलादि में छिपे हुए ठूठ, कण्टक आदि से अथवा जल, कीचड़ आदि से कष्ट पहुँचता है और अपना जीवन भी खतरे में पड़ सकता है। आचारांग में कहा है कि वर्षाकाल आ जाने पर तथा वर्षा हो जाने से तथा बहुत से प्राणी उत्पन्न हो जाते हैं, बहुत से बीज अंकुरित हो जाते हैं। मार्गों में बहुत से प्राणी एवं बीज उत्पन्न हो जाते हैं। बहुत हरियाली उत्पन्न हो जाती है। ओस, कुहरा और पानी बहुत स्थानों में भर जाता है। काई आदि स्थान-स्थान पर व्याप्त हो जाती है। बहुत से स्थानों पर कीचड़ या पानी से मिट्टी गीली हो जाती है। मार्ग रुक जाते हैं, मार्ग पर चला नहीं जा सकता। मार्ग सूझता नहीं है,अतः इन परिस्थितियों को देखकर मुनि को

वर्षा काल में एक ग्राम से दूसरे ग्राम विहार नहीं करना चाहिए। अपितु वर्षाकाल में यथावसर प्राप्त वसति में ही संयत रहकर वर्षावास व्यतीत करें।बृहत्कल्पभाष्य के अनुसार वर्षावास में गमन करने से पृथ्वी,जल,तेज,वायु,वनस्पति और त्रस - इन षट्कायिक जीवों का घात तो होता ही है, साथ ही वृक्ष की शाखा आदि सिर पर गिरने, कीचड़ में रपट जाने, नदी में बह जाने, काँटा आदि लगने के भय रहते हैं।

श्रमण जैनमुनि को प्रत्येक कल्पनीय कार्य करते समय अहिंसा और विवेक की दृष्टि रखना अनिवार्य है। वर्षाकाल में विहार करते रहने में अनेक बाधाओं के साथ ही जीव-हिंसा की बहुलता सदा रहती है, इसीलिए वर्षाकाल चार माह तक एक स्थान पर स्थिर रहकर वर्षायोग धारण का विधान है। इस प्रकार जैन परम्परा के साथ ही प्रायः सभी भारतीय परम्पराओं के धर्मों में साधुओं को वर्षाकाल के चार माह में एक स्थान पर स्थित रहकर धर्म-साधन करने का विधान है।

चातुर्मास का समय - सामान्यतः आषाढ़ से कार्तिक पूर्वपक्ष तक का समय वर्षा और वर्षा से उत्पन्न जीव-जीवाणुओं तथा अनन्त प्रकार के तृण, घास और जन्तुओं के पूर्ण परिपाक का समय रहता है। इसीलिए चातुर्मास (वर्षावास) की अवधि आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी की पूर्वरात्रि से आरम्भ होकर कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी की पश्चिम रात्रि तक मानी जाती है।

वर्षावास के समय में एक सौ बीस दिन तक एक स्थान पर रहना उत्सर्ग मार्ग है। विशेष परिस्थिति अथवा कारण होने पर अधिक और कम दिन भी ठहर सकते हैं। अर्थात् आषाढ़ शुक्ला दसमी से चातुर्मास करने वाले कार्तिक की पूर्णमासी के बाद तीस दिन तक आगे भी सकारण एक स्थान पर ठहर सकते हैं। अधिक ठहरने के प्रयोजनों में वर्षा की अधिकता, शास्त्राभ्यास, शक्ति का अभाव अथवा किसी की वैयावृत्य करना आदि हैं। आचारांग में भी कहा है कि वर्षाकाल के चार माह बीत जाने पर अवश्य विहार कर देना चाहिए, यह तो श्रमण का उत्सर्ग मार्ग है। फिर भी यदि कार्तिक मास में पुनः वर्षा हो जाए और मार्ग आवागमन के योग्य न रहे तो चातुर्मास के पश्चात् वहाँ पन्द्रह दिन और रह सकते हैं।

वर्षावास के तीन भेद - समय की दृष्टि से वर्षावास के जघन्य, मध्यम और उत्कृष्ट-- ये तीन भेद बताये हैंइनमें सांवत्सरिक प्रतिक्रमण (भाद्रपद शुक्ला पंचमी) से कार्तिक पूर्णमासी तक सत्तर दिनों का जघन्य वर्षावास कहा जाता है। श्रावण मास से कार्तिक तक-चार माह का मध्यम चातुर्मास है तथा आषाढ़ से मृगसर तक छह माह का उत्कृष्ट वर्षावास कहलाता है। इसके अन्तर्गत आषाढ़ बिताकर वहीं चातुर्मास करें और मार्गशीर्ष में भी वर्षा चालू रहने पर उसे वहीं बितायें।' स्थानांग आगमवृत्ति में कहा है कि प्रथम प्रावृट (आषाढ़) में और पर्युषणा कल्प के द्वारा निवास करने पर विहार न किया जाए। क्योंकि पर्युषणाकल्प पूर्वक निवास करने के बाद भाद्र शुक्ला पंचमी से कार्तिक तक साधारणतः विहार नहीं किया जा सकता, किन्तु पूर्ववर्ती पचास दिनों में उपयुक्त सामग्री के अभाव में विहार कर भी सकते है।

बृहत्कल्पभाष्य में वर्षावास समाप्त कर विहार करने योग्य समय के विषय में कहा है कि जब ईख बाड़ों के बाहर निकलने लगें, तुम्बियों में छोटे-छोटे तुंबक लग जायें, बैल शक्तिशाली दिखने लगे, गाँवों की कीचड़ सूखने लगे, रास्तों का पानी कम हो जाए, जमीन की मिट्टी कड़ी हो जाय तथा जब पथिक परदेश को गमन करने लगे तो श्रमण को भी वर्षावास की समाप्ति और अपने विहार करने का समय समझ लेना चाहिए।

चातुर्मास के योग्य स्थान - श्रमण को वर्षायोग के धारण का उपयुक्त समय जानकर धर्म-ध्यान और चर्या आदि के अनुकूल योग्य प्रासुक स्थान पर चातुर्मास व्यतीत करना चाहिए। अतिप्राचीन आचारांग आगमसूत्र में चातुर्मास योग्य स्थान के विषय में कहा है कि वर्षावास करने वाले साधु या साध्वी को उस ग्राम-नगर खेड, कर्वट, मडंब, पट्टण, द्रोणमुख, आकर (खदान), निगम, आश्रय, सन्निवेश या राजधानी की स्थिति भलीभाँति जान लेनी चाहिए। जिस ग्राम-नगर यावत् राजधानी में एकान्त में स्वाध्याय करने के लिए विशाल भूमि न हो, मल-मूत्र त्याग के लिए योग्य भूमि न हो, पीठ (चौकी) फलक, शय्या एवं संस्तारक की प्राप्ति सुलभ न हो और न प्रासुक (निर्दोष) एवं एषणीय (आहार-पानी रूप भिक्षा) सुलभ हो, जहाँ बहुत से श्रमण, ब्राह्मण, अतिथि, दरिद्र और भिखारी पहले से आए हुए हों और भी दूसरे आनेवाले हों, जिससे सभी मार्गों पर जनता की अत्यन्त भीड़ हो और साधु-साध्वी को भिक्षाटन, स्वाध्याय, शौच आदि आवश्यक कार्यों के लिए अपने स्थान से सुखपूर्वक निकलना और प्रवेश करना भी कठिन हो, स्वाध्याय आदि क्रिया भी निरुपद्रव न हो सकती हो, ऐसे ग्राम-नगर आदि में वर्षाकाल प्रारम्भ हो जाने पर भी वर्षावास व्यतीत न करे।

प्राकृत आगम कल्पसूत्र की कल्पलता टीका के अनुसार जैन साधु -साध्वियों को चातुर्मास के योग्य स्थान में निम्नलिखित गुण होना चाहिए--जहाँ विशेष कीचड़ न हो, जीवों को अधिक उत्पत्ति न हो, पंचम समिति के सम्यक् पालन हेतु शौच(मल-मूत्र त्याग)- स्थल निर्दोष हो, रहने का स्थान शान्तिप्रद एवं स्वाध्याय (शास्त्रों का अध्ययन)योग्य हो, गोरस की अधिकता हो, जनसमूह भद्र हो, राजा धार्मिकवृत्ति का हो, भिक्षा सुलभ हो, श्रमण-ब्राह्मण का अपमान न होता हो। ऐसे ही अनुकूल और निरापद स्थान चातुर्मास के सर्वथा योग्य होते हैं।

वर्षायोग ग्रहण एवं उसकी समाप्ति की विधि -

यद्यपि दूसरी सदी के वट्टकेराचार्य द्वारा रचित मूलाचार आदि प्राकृत भाषा के प्राचीन ग्रन्थों में वर्षायोग गृहण आदि की विधि का स्पष्ट उल्लेख नहीं है ,किन्तु उत्तरवर्ती विद्वान् पंडित आशाधर प्रणीत ग्रन्थ अनगार धर्मामृत ग्रंथ में कहा है कि आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी की रात्रि के प्रथम पहर में पूर्व आदि चारों दिशाओं में प्रदक्षिणा क्रम से लघु चैत्यभक्ति

चार बार पढ़कर सिद्धभक्ति,योगिभक्ति,पंचगुरुभक्ति और शान्तिभक्ति करते हुए आचार्य आदि साधुओं को वर्षायोग ग्रहण करना चाहिए तथा कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी की रात्रि के पिछले पहर में इसी विधि से वर्षायोग को छोड़ना चाहिए। आगे बताया है कि वर्षायोग के सिवाय अन्य हेमन्त आदि ऋतुओं में अर्थात् ऋतुबद्ध काल में श्रमणों का एक स्थान में एक मास तक रुकने का विधान है।

अनगारधर्मामृत में ही आगे कहा है कि जहाँ चातुर्मास करना अभीष्ट हो, वहाँ आषाढ़ मास में वर्षायोग के स्थान पर पहुँच जाना चाहिए तथा मार्गशीर्ष महीना बीतने पर वर्षायोग के स्थान को छोड़ देना चाहिए। कितना ही प्रयोजन होने पर भी वर्षा योग के स्थान में श्रावण कृष्णा चतुर्थी तक अवश्य पहुँच जाना चाहिए। इस तिथि का उल्लंघन नहीं करना चाहिए तथा कितना ही प्रयोजन होने पर भी नहीं। कार्तिक शुक्ला पंचमी तक वर्षायोग के स्थान से अन्य स्थान को नहीं जाना चाहिए। यदि किसी दुर्निवार उपसर्ग आदि के कारण वर्षायोग के उक्त प्रयोग में अतिक्रम करना पड़े तो साधु को प्रायश्चित्त लेना चाहिए।

वर्षायोग धारण के विषय में श्वेताम्बर परम्परा के कल्पसूत्र आगम में कहा है कि मासकल्प से विचरते हुए निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थियों(साधु -साध्वियों) को आषाढ़ मास की पूर्णिमा को चातुर्मास के लिए वसना कल्पता है। क्योंकि निश्चय ही वर्षाकाल में मासकल्प विहार से विचरने वाले साधुओं और साध्वियों के द्वारा एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक के जीवों की विराधना होती है। कल्पसूत्रनिर्युक्ति में भी कहा है कि आषाढ़ मास की पूर्णिमा तक नियत स्थान पर पहुँचकर श्रावण कृष्ण पंचमी से वर्षावास प्रारम्भ कर देना चाहिए। उपयुक्त क्षेत्र न मिलने पर श्रावण कृष्ण दसमी से पाँच-पाँच दिन बढ़ाते-बढ़ाते भाद्र शुक्ल पंचमी तक तो निश्चित ही वर्षावास प्रारम्भ कर देना चाहिए, फिर चाहे वृक्ष के नीचे ही क्यों न रहना पड़े। किन्तु इस तिथि का उल्लंघन नहीं होना चाहिए।

चातुर्मास के बीच में भी विहार करने के कारण - भगवती आराधना प्राकृत भाषा के प्राचीनग्रंथ (प्रथम शताब्दी)की विजयोदया टीका में अपराजितसूरि के अनुसार वर्षायोग धारण कर लेने पर भी यदि दुर्भिक्ष पड़ जाए, महामारी फैल जाये, गाँव अथवा उस क्षेत्र (प्रदेश) में किसी कारण से उथल-पुथल हो जाए, गच्छ का विनाश होने के निमित्त आ जाये तो देशान्तर में जा सकते हैं। क्योंकि ऐसी स्थिति में वहाँ ठहरने से रत्नत्रयधर्म और संयम की विराधना होगी। आषाढ़ की पूर्णमासी बीतने पर प्रतिपदा आदि के दिन देशान्तर गमन कर सकते हैं। स्थानांगसूत्र प्राकृत आगम में इसके पांच कारण बताये हैं–१. ज्ञान के लिए, २. दर्शन के लिए, ३. चारित्र के लिए, ४. आचार्य या उपाध्याय की सल्लेखना/समाधिमरण के अवसर पर तथा५. वर्षाक्षेत्र से बाहर रहे हुए आचार्य अथवा उपाध्याय का वैयावृत्त्य करने के लिए।

साथ ही यह भी कहा है कि निर्ग्रन्थ और साध्वियों को प्रथम प्रावृट् चातुर्मास के पूर्वकाल में ग्रामानुग्राम विहार नहीं करना चाहिए। संघ में रहकर साधना ,संयम और ज्ञानाभ्यास करना चाहिए। किन्तु इन पाँच कारणों से विहार किया भी जा सकता है–१. शरीर, उपकरण आदि के अपहरण का भय होने पर, २. दुर्भिक्ष होने पर, ३. किसी के द्वारा अत्यधिक व्यथित किये जाने पर अथवा ग्राम से निकाल दिये जाने पर, ४. बाढ़ आ जाने पर तथा ५. अनार्यों (अराजकता तत्वों)द्वारा उपद्रुत किये जाने पर।

इस प्रकार श्रमण के लिए चातुर्मास अर्थात् वर्षावास का समय उसी प्रकार राग, द्वेष तथा क्रोध, मान, माया और लोभ आदि कषायरूपी अग्नि एवं मिथ्यात्व रूपी ताप का त्याग एवं वैराग्य की शीतल धारा से तथा स्वाध्याय और ध्यान की जलवृष्टि से शान्त करने का होता है, जिस प्रकार जल के शीतलधारा बरसकर धरती की तपन शान्त करती है।

इस तरह जैन परम्परा में चातुर्मास का धार्मिक, आध्यात्मिक और सामाजिक क्षेत्रों में विकास का महत्त्व तो है ही, इससे राष्ट्रप्रेम के साथ ही व्यक्ति और समाज को एक सूत्र में पिरोने का, वैर भाव दूर करके मैत्री,सौहार्द्र एवं समरसता का वातावरण निर्मित करने का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य सिद्ध है।

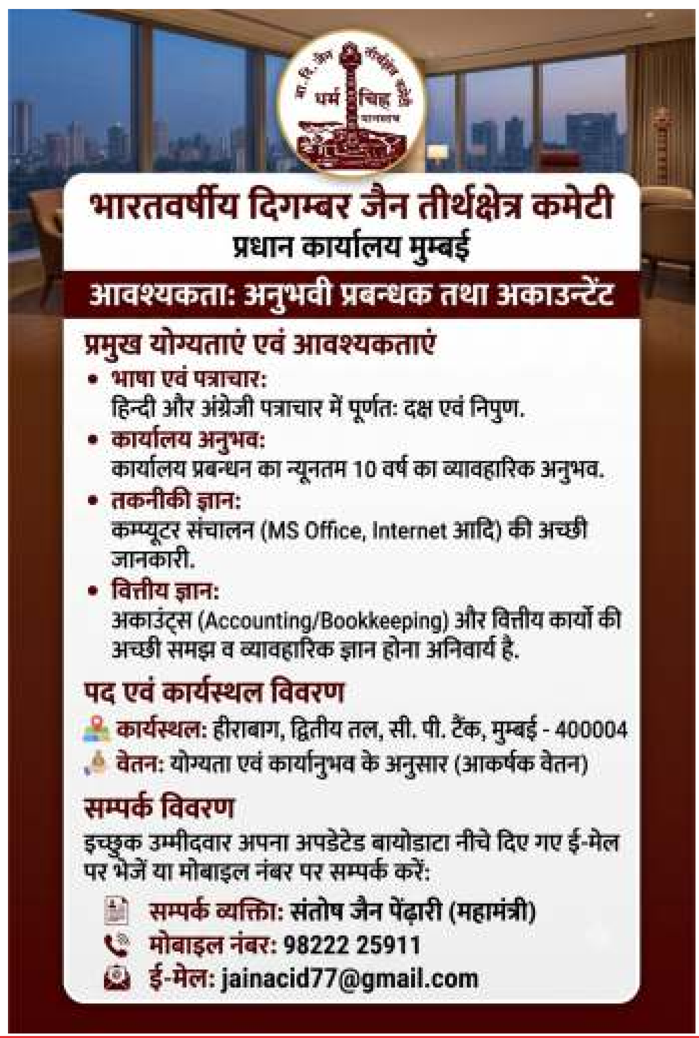

तीर्थों के संरक्षण-संवर्द्धन के लिए संकल्पित हुआ महिला मण्डल

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के अंतर्गत महिला मंडल की बैठक सम्पन्न

ललितपुर। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के 125वें स्थापना वर्ष (शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष) के उपलक्ष्य में अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, उत्तर प्रदेश-उत्तराखंड के तत्वावधान में ललितपुर के आनंद रेजीडेंसी, इलाइट चौराहा में महिला मण्डल की महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक में नगर की विभिन्न महिला मण्डलों की संयोजिकाओं ने भाग लेते हुए तीर्थों के संरक्षण, संवर्द्धन एवं विकास के लिए सक्रिय सहयोग का संकल्प लिया।

उत्तर प्रदेश-उत्तराखंड के अध्यक्ष जवाहरलाल जैन (सिकंदराबाद) ने कहा कि कमेटी अपने 125वें स्थापना वर्ष को राष्ट्रीय स्तर पर विविध कार्यक्रमों के माध्यम से मनाएगी। उन्होंने कहा कि प्राचीन जैन तीर्थ, मंदिर एवं मूर्तियाँ हमारी अमूल्य धरोहर हैं, जिनके संरक्षण एवं संवर्द्धन के लिए समाज के प्रत्येक वर्ग को आगे आना होगा।

प्रचार प्रसार मंत्री उ.प्र., उत्तराखंड संयोजिका मीनू जैन (गाजियाबाद) ने महिला मण्डलों से नियमित मासिक बैठकें आयोजित करने, प्रत्येक दो माह में किसी तीर्थक्षेत्र की सामूहिक वंदना करने, गुल्लक योजना को घर-घर तक पहुँचाने तथा आय-व्यय का सुव्यवस्थित लेखा-जोखा रखने का आह्वान किया। उन्होंने बुंदेलखंड क्षेत्र के जैन तीर्थों के विकास में महिलाओं की सक्रिय भूमिका पर भी बल दिया।

कमेटी के उपाध्यक्ष इंजी. अनिल जैन 'अंचल' ने 125वें स्थापना वर्ष के प्रस्तावित आयोजनों की जानकारी देते हुए कहा कि तीर्थों का संरक्षण केवल धार्मिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक उत्तरदायित्व भी है।

संयुक्त महामंत्री डॉ. सुनील जैन संचय ने कहा कि "तीर्थ, मंदिर और मूर्तियाँ हमारी अनमोल धरोहर हैं। इन्हीं से हमारी धार्मिक एवं सांस्कृतिक पहचान सुरक्षित रहती है। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी पिछले 125 वर्षों से इनके संरक्षण, संवर्द्धन एवं विकास के लिए सतत कार्य कर रही है।"

तीर्थक्षेत्र कमेटी ललितपुर इकाई की महामंत्री अनुपमा बजाज ने आभार व्यक्त किया। अध्यक्ष श्रीमती अनीता मोदी ने अतिथियों का स्वागत किया। ललितपुर महिला संभाग द्वारा कूपन एवं गुल्लक के माध्यम से एकत्रित राशि महिला मण्डल संचालिका श्रीमति मीनू जैन को प्रदान की जिसकी सभी ने अनुमोदना की।

बैठक के अंत में उपस्थित महिलाओं ने जैन तीर्थों के संरक्षण एवं संवर्द्धन के लिए सक्रिय सहभागिता का सामूहिक संकल्प लिया।

बैठक में अनुपमा बजाज, अनीता मोदी, आरती जैन, सुषमा जैन, सुषमा अतिशय, रूबी जैन, नीलू जैन, उमा जैन, राजश्री जैन, विजय जैन, ज्योति जैन, अंजली जैन, संगीता जैन, रश्मि जैन, योगिता जैन, मीना जैन, पिंकी जैन, शोभा टडैया, रश्मि डोंगरा, सुनीता टडैया, नीतू जैन, जयश्री जैन सहित नगर की अनेक महिला पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहीं।

आचार्य श्री वर्धमानसागर जी महाराज का समाधिमरण, साधना की शिखर-यात्रा

(समाधिमरण : श्रमण परम्परा की अमर साधना)

डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर

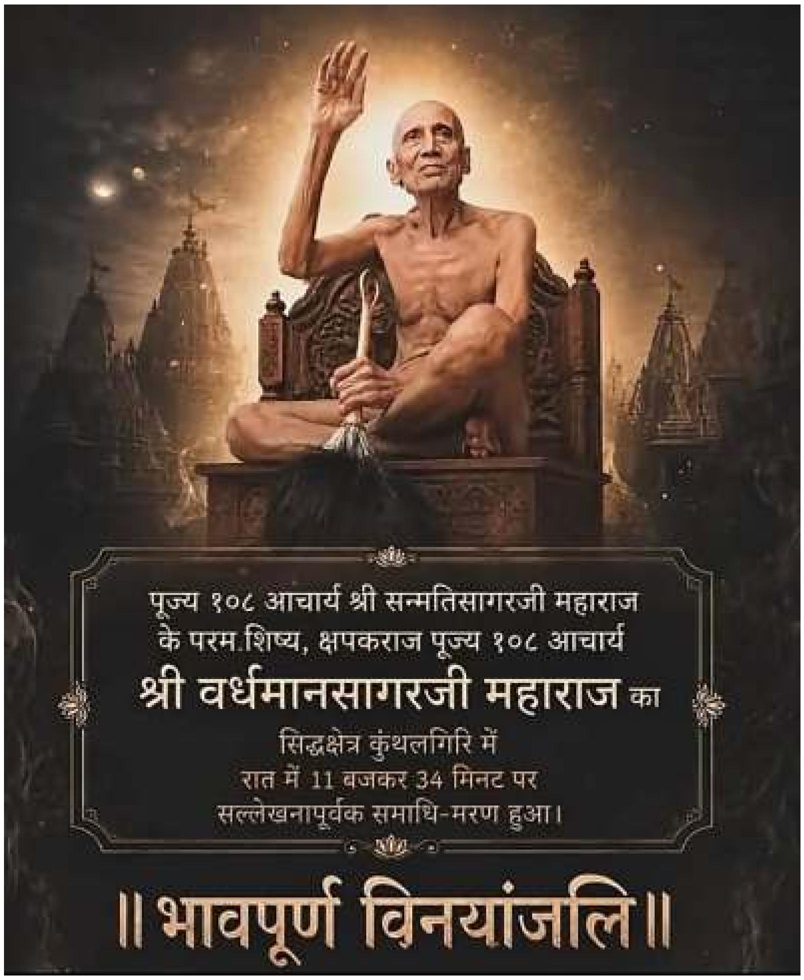

भारतीय अध्यात्म की महान परम्परा में कुछ घटनाएँ केवल इतिहास का विषय नहीं बनतीं, वे युगों तक संस्कृति की चेतना को आलोकित करती रहती हैं। वे बताती हैं कि तप, त्याग, संयम और आत्मविजय का मार्ग आज भी उतना ही जीवंत है, जितना सहस्रों वर्ष पूर्व था। परम पूज्य क्षपकराज आचार्य श्री वर्धमानसागर जी महाराज (दक्षिण) का समाधिमरण ऐसी ही एक दिव्य आध्यात्मिक घटना है, जिसने समस्त जैन समाज ही नहीं, बल्कि संपूर्ण भारतीय अध्यात्म-जगत को आत्मानुशासन और वैराग्य की अप्रतिम प्रेरणा प्रदान की है।

आचार्यश्री वर्धमान सागर जी महाराज (दक्षिण) का जन्म 03जनवरी 1951, को निमशिरगांव,कोल्हापुर(महाराष्ट्र) में श्री अडगोंडा पाटिल और श्रीमती मुरुदेवी पाटिल के यहाँ हुआ। मुनि दीक्षा 2 फरवरी 2004, इचलकरंजी, कोल्हापुर (महाराष्ट्र) में हुई। दीक्षा गुरु आचार्यश्री सन्मतिसागरजी महाराज (दक्षिण) थे। आचार्यपदारोहण18 फरवरी 2011, कोथली, कोल्हापुर (महाराष्ट्र) में हुआ।

दिनांक 5 जुलाई 2026 की रात्रि 11:34 बजे, दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र कुंथलगिरि (महाराष्ट्र) में निर्यापक आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के पावन सान्निध्य में पवित्र णमोकार महामंत्र का श्रवण करते हुए तेरह दिवसीय यम-सल्लेखना पूर्ण कर समाधिमरण प्राप्त करना किसी सामान्य साधु का जीवनांत नहीं, बल्कि आत्मा की विजय-यात्रा का सर्वोच्च क्षण है। यह मृत्यु नहीं, अपितु समता, साधना और आत्मजागरण की चरम परिणति है।

आचार्य श्री वर्धमानसागर जी महाराज का समूचा जीवन इस सत्य का प्रमाण रहा कि धर्म का वास्तविक वैभव वाणी में नहीं, बल्कि चरित्र में प्रतिष्ठित होता है। उनकी मुनिचर्या आगमिक मर्यादाओं के प्रति अटूट निष्ठा की जीवंत अभिव्यक्ति थी। सरलता उनके स्वभाव का आभूषण थी, विनय उनका परिचय था और करुणा उनकी सहज प्रवृत्ति। उनके व्यक्तित्व में कठोर तपस्या और कोमल संवेदना का अद्भुत संतुलन दिखाई देता था। उनके दर्शन मात्र से साधकों को शांति का अनुभव होता था और उनके सान्निध्य में धर्म केवल उपदेश नहीं, बल्कि साक्षात् जीवन-दर्शन बन जाता था।

उनकी साधना का सबसे उज्ज्वल पक्ष गुरु-भक्ति और त्याग की वह परम्परा है, जो श्रमण संस्कृति की आत्मा रही है। उन्होंने अपने आचार्य पद का दायित्व अपने सुयोग्य गुरु-भाई आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज को समर्पित कर यह सिद्ध कर दिया कि श्रमण परम्परा में पद प्रतिष्ठा का नहीं, उत्तरदायित्व का विषय है। जहाँ संसार अधिकारों की रक्षा में संघर्ष करता है, वहाँ संत परम्परा अधिकारों का त्याग कर आदर्श स्थापित करती है। यह त्याग ही श्रमण संस्कृति को अन्य सभी परम्पराओं से विशिष्ट बनाता है।

कुंथलगिरि की पावन भूमि इस दृष्टि से भी अत्यन्त गौरवशाली है कि इसी तपोभूमि पर चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी

महाराज ने छत्तीस दिन की यम-सल्लेखना के उपरान्त 18 सितम्बर 1955 को समाधिमरण प्राप्त कर इतिहास रचा था। आज उसी पवित्र धरती पर आचार्य श्री वर्धमानसागर जी महाराज का समाधिमरण मानो उसी गौरवशाली परम्परा की पुनः सशक्त उद्घोषणा बन गया है। यह केवल एक संयोग नहीं, बल्कि श्रमण संस्कृति की अखण्ड साधना-धारा का सजीव प्रवाह है।

जैन इतिहास में गुरु और शिष्य के बीच त्याग, श्रद्धा और सेवा के जो दिव्य उदाहरण अंकित हैं, उनमें महाकवि आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज और उनके शिष्य आचार्य विद्यासागर जी महाराज का प्रसंग अत्यन्त प्रेरणादायी माना जाता है। गुरु ने अपने शिष्य को आचार्य पद देकर स्वयं विनम्रतापूर्वक उन्हें नमोस्तु किया और शिष्य ने गुरु की अंतिम क्षण तक अनन्य सेवा कर गुरु-भक्ति का अनुपम आदर्श स्थापित किया। यही दिव्य परम्परा वर्तमान में पुनः दृष्टिगोचर हुई, जब आचार्य श्री वर्धमानसागर जी महाराज ने अपने उत्तराधिकारी को आचार्य पद प्रदान कर स्वयं सल्लेखना का व्रत धारण किया और उनके उत्तराधिकारी ने भी सम्पूर्ण समर्पण के साथ गुरु की वैयावृत्ति का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया। यह दृश्य केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि भारतीय गुरु-शिष्य परम्परा की सर्वोच्च सांस्कृतिक अभिव्यक्ति है।

सल्लेखना को सामान्य दृष्टि से मृत्यु का वरण समझ लेना उसकी आध्यात्मिक गरिमा का अवमूल्यन होगा। जैन दर्शन में सल्लेखना जीवन से पलायन नहीं, बल्कि राग-द्वेष, मोह और कषायों का क्रमिक क्षय करते हुए समत्वपूर्वक शरीर का परित्याग है। यह आत्मशुद्धि की चरम साधना है, जिसमें साधक मृत्यु का नहीं, अपने कर्मबंधन का अतिक्रमण करता है। इसी कारण आगमों में इसे अत्यन्त पवित्र आराधना कहा गया है। आचार्य श्री वर्धमानसागर जी महाराज ने तेरह दिनों तक जिस धैर्य, समता और अडिग तप के साथ इस साधना को पूर्ण किया, वह आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का अमूल्य स्रोत रहेगा।

उनका जीवन यह भी सिखाता है कि आध्यात्मिक ऊँचाइयाँ बाह्य चमत्कारों से नहीं, बल्कि आत्मानुशासन, मर्यादा और निरन्तर साधना से प्राप्त होती हैं। उन्होंने अपने जीवन के प्रत्येक क्षण को धर्म के लिए समर्पित किया। विद्वत्ता उनके भीतर थी, किन्तु उससे अधिक विनम्रता थी। नेतृत्व उनके पास था, किन्तु उससे कहीं अधिक सेवा-भाव था। यही कारण है कि वे केवल एक आचार्य नहीं, बल्कि साधुता की जीवित प्रतिमा बनकर समाज के हृदय में प्रतिष्ठित हुए।

आज जब समाज भौतिक उपलब्धियों को सफलता का मानदण्ड मानने लगा है, तब आचार्य श्री वर्धमानसागर जी महाराज (दक्षिण) का समाधिमरण यह स्मरण कराता है कि मनुष्य की सबसे बड़ी विजय स्वयं पर विजय है। जिसने अपने मन, वाणी और इन्द्रियों को संयमित कर लिया, वही वास्तविक अर्थों में विजेता है। यही जैन धर्म का संदेश है और यही श्रमण संस्कृति का शाश्वत आदर्श।

आचार्य श्री वर्धमानसागर जी महाराज का समाधिमरण इतिहास की एक घटना भर नहीं, बल्कि यह घोषणा है कि तप की परम्परा आज भी जीवित है, त्याग का प्रकाश आज भी प्रज्वलित है और आत्मकल्याण का मार्ग आज भी साधकों के लिए खुला हुआ है। ऐसे दिव्य महापुरुषों का जीवन और उनका समाधिमरण आने वाली पीढ़ियों को यह प्रेरणा देता रहेगा कि जीवन का वास्तविक उद्देश्य बाह्य वैभव नहीं, अपितु आत्मा की निर्मलता और मोक्षमार्ग की साधना है।

उनके श्रीचरणों में विनम्र श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए यही मंगलकामना है कि उनकी समता, साधना, वैराग्य और आत्मानुशासन का दिव्य संदेश युगों-युगों तक श्रमण संस्कृति के पथ को आलोकित करता रहे तथा प्रत्येक साधक के अंतःकरण में आत्मोन्नति की ज्योति प्रज्वलित करता रहे। हमें भी ऐसी ही समाधिमरण प्राप्त हो। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

उदासीन आश्रम ईशरी बाजार में आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का दीक्षा दिवस मनाया गया; साधकों ने किया वृक्षारोपण

परम पूज्य, राष्ट्रसंत आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के पावन दीक्षा दिवस के शुभ अवसर पर 30 जून 2026 को उदासीन आश्रम, ईशरी बाजार में एक भव्य और आध्यात्मिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस मंगलमय दिवस को प्रकृति संरक्षण से जोड़ते हुए आश्रम परिसर में व्यापक स्तर पर वृक्षारोपण किया गया। आचार्य श्री के संयम, त्याग और तपस्या को नमन करते हुए आश्रम के वरिष्ठ साधकों—ब्र. पंकज भैया जी, ब्र. संजय भैया जी, ब्र. मनीष भैया जी एवं अन्य सभी आश्रमस्थ साधक गणों ने मिलकर औषधीय और छायादार पौधे रोपे। इस पुनीत कार्य के दौरान साधकों ने कहा कि गुरुदेव का जीवन हमें न केवल आध्यात्मिक उत्थान की प्रेरणा देता है, बल्कि प्रकृति की रक्षा करना भी सिखाता है। वृक्षारोपण के उपरांत सभी श्रद्धालुओं ने सामूहिक रूप से आचार्य श्री के चरणों में अर्घ्य समर्पित किया और उनके बताए मार्ग पर चलने का संकल्प लिया। इस पावन आयोजन से पूरा आश्रम परिसर गुरुभक्ति और पर्यावरण चेतना के अनूठे रंग में सराबोर नजर आया।

विनम्र श्रद्धांजली

तीर्थक्षेत्र कमेटी के पूर्व अध्यक्ष श्री प्रभातचन्द्र जैन की पूजनीय माता जी का निधन

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रभातचन्द्र सवाईलाल जैन जी की पूजनीय माता जी का स्वर्गवास हो गया है। इस दुखद घड़ी में संपूर्ण जैन समाज ने गहरा शोक व्यक्त किया है। तीर्थक्षेत्र कमेटी के पदाधिकारियों, विभिन्न सामाजिक संगठनों और प्रबुद्ध जनों ने श्री प्रभातचन्द्र जी एवं समस्त जैन परिवार के प्रति अपनी संवेदनाएँ प्रकट की हैं।

तीर्थक्षेत्र कमेटी के मध्यांचल अध्यक्ष श्री डी.के. जैन को मातृशोक

क्लर्क कॉलोनी दिगंबर जैन समाज के स्वर्गीय श्री बाबूलाल जी नेताजी की धर्मपत्नी तथा भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के मध्यांचल अध्यक्ष व समाजसेवी श्री डी.के. जैन (दुर्ग वाला परिवार) की पूजनीय माता जी श्रीमती कोमल जी जैन का दुखद निधन हो गया है। 6 जुलाई 2026 (सोमवार) को श्री दिगंबर जैन मांगलिक भवन, क्लर्क कॉलोनी, इन्दौर में आयोजित उठावना एवं तेरहवीं की रस्म में संपन्न हुई

इस दुखद घड़ी में तीर्थक्षेत्र कमेटी के अनेक वरिष्ठ पदाधिकारी, सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधि और प्रबुद्ध जन व्यक्तिगत रूप से उपस्थित हुए। उपस्थित सभी पदाधिकारियों और श्रद्धालुओं ने दिवंगत पुण्यात्मा की शांति के लिए सामूहिक प्रार्थना की तथा शोक संतप्त जैन परिवार के प्रति अपनी गहरी संवेदनाएँ व्यक्त कीं।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार उक्त दोनों दिवंगत पुण्यात्माओं की शांति के लिए भगवान से प्रार्थना करते हुए शोक संतप्त परिवार को यह दुःख सहन करने की शक्ति मिले ऐसी मंगल कामना करता है।

पावागढ़ की सिद्ध-धरा पर चार जिनेश्वरी मुनि दीक्षा

- निर्मलकुमार पाटोदी, इंदौर

लव-कुश सहित पांच कोटि मुनियों की मोक्ष भूमि के संबंध में निर्वाण काण्ड में उल्लेख आया है: रामचंद्र के सुत दोयवीर, लाड नरेन्द्र आदि गुणधीर ।पांचकोड़ि मुनि मक्ति मझार, पावागढ़ बंदो निरधार।।गुजरात के पावागढ़ सिद्ध के आंगन में एक दुर्लभ, ऐतिहासिक एवं परम पुण्यदायी अवसर उपस्थित हुआ। आषाण कृष्ण 10-11 वीर निर्वाण संवत् 2552 को तदनुसार शुक्रवार की दीक्षा तिथि 10 जुलाई 2026 का दिन सार्थक हो गया। जिस भूमि पर कभी तीन तीर्थंकरों का समवशरण आया था। उस परम- पावन वसुंधरा पर संत शिरोमणि आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महायोगी के शिष्य, अर्हत ध्यान योग प्रणेता, अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी श्रमण श्री प्रणम्यसागर जी मुनिराज के सानिध्य और करकमलों से चार ऐलक, बाल ब्रह्मचारियों की भव्यतम जैनेश्वरी निर्ग्रंथ मुनि दीक्षा का सुयोग हजारों-हजार श्रद्धालु श्रावकों की साक्षी में उपस्थित हुआ।

पता नहीं पावागढ़ तक कैसे आ गया ?

दीक्षा प्रदाता मुनिश्री प्रणम्यसागर जी ने गुरुराज ने कहा कि मुझे मालुम नहीं था कि मैं दिल्ली से चलकर पावागढ़, गुजरात तक जल्दी-जल्दी में विभिन्न जगहों से होता हुआ कैसे यहां आ गया? यहां के लोगों ने मेरे मन के मंगलमय भाव को पकड़ लिया और दीक्षा महोत्सव का रूप दे दिया। मैं ऐसे ही दीक्षा नहीं दे रहा हूं। छ: महिने से चारों ऐलक महाराजों की परीक्षा हुई है। मैंने देखा कि इनमें कभी गुस्सा नहीं आया। इनकी साधना बहुत अच्छी रही है। आचार्य महाराज से व्रत लेकर इन्होंने कर्मफल का सन्यास धारण किया है। सहजता से लंबे विहार में धूप, गर्मी सहन की है। अपने व्रतों का मनोभाव से पालन किया है। इनमें धर्मानुराग का भाव है। शिक्षा के बाद दीक्षा होती है। शिक्षित होना अलग बात है और दीक्षित होना अलग बात है।

निर्ग्रंथ श्रमण दीक्षा मोक्षमार्ग का पथ:

निर्ग्रंथ श्रमण दीक्षा मनुष्य के जीवन को सार्थक बनाने का मार्ग है। यह केवल वस्त्रों का त्याग मात्र नहीं है। बल्कि राग-द्वेष, ममता और परिग्रह के त्याग का महापर्व है। आत्मकल्याण और मोक्षमार्ग की ओर बढ़ने का सर्वोच्च कदम है। इस स्वरूप को पाने के लिए देवगण भी तरसते हैं। वे इस अवस्था के सामने मतमस्तक हो जाते हैं। यह तो मंगलस्वरूप है। संसार का सुख क्षणिक होता है, नश्वर भी होता है। आत्मिक सुख शाश्वत होता है। इसे पाने के लिए नश्वर सुख का त्याग करना होता है। इसी का नाम निर्ग्रंथ श्रमण दीक्षा है।

गुरु चरणों में दीक्षार्थियों का निवेदन:

जिनेश्वरी मुनि दीक्षा के अभिलाषी शिष्यों ने गुरुचरणों में निवेदन करते हुए अपनी भावना व्यक्त की कि आप वर्तमान के महावीर हैं। इस आत्मा को मोक्ष का मार्ग बतावें। छ: महिनों से गुरुचरणों में रहकर जो पुण्य इकट्ठा किया है, उसे गुरु जी के करकमलों में सौंपते हैं। हमने सन् 2020 में महा योगीश्वर श्री 108 विद्यासागर जी गुरुदेव से व्रत ग्रहण किए

थे। वे प्रसन्न होंगे कि हम उनकी आज्ञा का पालन कर रहे हैं। आप सरस्वती पुत्र ने हमें आगम का अध्ययन कराया है। हमने आत्म स्वरूप की साधना को साकार करने का प्रयास किया है। पितृतुल्य गुरु जी हम मोक्षमार्ग की ओर बढ़ने के लिए रत्नत्रय की आराधना चाहते हैं। हम जो कुछ भी हैं वह सब गुरु जी आपका दिया हुआ है। आपकी हर आज्ञा का पालन करेंगे। पूज्यश्री जी आपके सानिध्य में 11 महिनों तक रहकर वैराग्य पथ की ओर चलने की प्रेरणा मिली है। आपसे प्रार्थना करते हैं कि हमें आपसे निर्ग्रंथ रूप चाहिए। जिनेश्वरी निर्ग्रंथ दीक्षा प्रदान करने की अनुकंपा कर अनुग्रहित करें। सब को क्षमा करते हैं, सबसे क्षमा मांगते हैं। नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।

चार ऐलक महाराज को दीक्षागुरु से मिले श्रमण दीक्षा के संस्कार:

पूज्य गुरुदेव 108 श्री प्रणम्यसागर जी महामुनिराज ने पूज्य ऐलक श्री अनुनयसागर जी, अनुरूपसागर जी, अनुरागसागर जी व अनुसंगसागर जी दीक्षार्थियों के मस्तक पर विधिवत् मंत्रोच्चारण के साथ श्रमण जिनेश्वरी दीक्षा के संस्कार आरोपित किये। कुंदकंदाचार्य से प्रारंभ हुई मूल आम्नाय के पालक चारित्र चक्रवर्ती पूज्य आचार्य 108 श्री शांतिसागर जी, वीरसागर जी, शिवसागर जी, ज्ञानसागर जी और विद्यासागर जी के शिष्य श्री प्रणम्यसागर जी के द्वारा स्थापित परंपरा का पालन किया गया। इसके बाद में पूज्य दीक्षा प्रदाता मुनिश्री जी ने नामकरण घोषित किया। तदनुसार ऐलक श्री अनुनयसागर जी का नाम मुनिश्री अनुनयसागर जी, अनुरूपसागर जी का नाम मुनिश्री अनुरूपसागर जी, अनुरागसागर जी का नाम मुनिश्री अनुरागसागर जी और अनुसंगसागर जी का नाम मुनिश्री अनुसंगसागर जी घोषित किया गया। इसके बाद सभी मुनिगणों को पिच्छी, कमण्डलु और शास्त्र भेंट किये गये। बताया गया कि आज की दीक्षा तिथि में आचार्यश्री ज्ञानसागर जी ने

विद्यासागर जी को इसी आषाढ़ कृष्ण एकादशी की तिथि के दिन दीक्षा प्रदान की थी।

दीक्षा प्रदाता पूज्य प्रणम्यसागर जी का उदबोधन:

दीक्षा महोत्सव में गुजरात, दिल्ली, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश और देश के विभिन्न भागों से दीक्षा महोत्सव में पधारे हजारों-हजार श्रद्धालुओं की साक्षी में नव दीक्षित मुनिराजों को दीक्षा प्रदाता गुरु महाराज पूज्यश्री प्रणम्यसागर जी ने संबोधित करते हुए अपने उदबोधन में कहा कि आप पंच गुरुओं की श्रेणी में आ गये हैं। आपको मुनि पद में समाहित 28 मूलगुणों का पालन करना है। इनमें से एक भी कम पालन नहीं होना चाहिए। हमेशा के लिये वस्त्रों का त्याग , स्नान नहीं, भूमि, काठ, पत्थर पर शयन करना है। दांतों को चमकाएंगे नहीं, खड़े होकर अंजुलि में आहार करेंगे। आजीवन एक बार भोजन, सभी अंतरायों का पालन करेंगे।

आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज की कुटुंब परंपरा में शिष्यों की वृद्धि हो रही है यह। वह उदार भावना रखते थे। सभी उनके हो जाते थे। आज आप सभी की पूज्य प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की परंपरा में दीक्षा हुई है। यहां पर ध्यान करना नहीं, ध्यान हो जाता है। आचार्य महाराज कहते थे जाओ, माल बेचों। ग्राहकी करों। हमने जो ज्ञान दिया है वह दूसरों को दो। आपके माध्यम से सम्यक ज्ञान दूसरों के पास पहुंचे।

दीक्षा महोत्सव के प्रमुख अतिथि आर के मार्बल के श्री अशोक जी पाटनी ने दीक्षा महोत्सव की अनुमोदना करते हुए निवेदन किया कि मुनिश्री जी अपने संघ सहित किसनगढ़ पधारें। इस अवसर पर सौभाग्यमल जी कटारिया ऑटो मोबाइल, परिवार के राजेन्द्रकुमार जी कटारिया ने पूज्य मुनि संघ को अहमदाबाद में इस वर्ष का चातुर्मास स्थापित करने के लिये प्रार्थना की।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जैनधर्म और समाज : चुनौतियाँ, चिंतन और समाधान

- डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर

आज का युग परिवर्तन, प्रतिस्पर्धा और वैश्वीकरण का युग है। विज्ञान और तकनीक ने जहाँ मानव जीवन को सुविधासंपन्न बनाया है, वहीं नैतिक मूल्यों, आध्यात्मिक चेतना और सांस्कृतिक अस्मिता के समक्ष अनेक चुनौतियाँ भी खड़ी कर दी हैं। विश्व के प्राचीनतम और वैज्ञानिक धर्मों में से एक जैनधर्म, जिसने अहिंसा, अनेकांत, अपरिग्रह और आत्मशुद्धि का अनुपम संदेश दिया, आज स्वयं अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक और वैचारिक चुनौतियों से जूझ रहा है। यह केवल धर्म की चुनौती नहीं, बल्कि उस जीवनदृष्टि की चुनौती है जो सम्पूर्ण मानवता के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करती है।

समय का प्रवाह कभी स्थिर नहीं रहता। वह अपने साथ नवीन संभावनाएँ लाता है तो अनेक संकटों की आहट भी सुनाता है। आज जैनधर्म और जैन समाज भी ऐसे ही एक संक्रमणकाल से गुजर रहे हैं, जहाँ एक ओर गौरवशाली परम्पराओं का स्वर्णिम इतिहास है, तो दूसरी ओर आधुनिकता की अंधी दौड़ में मूल्यों का क्षरण भी दृष्टिगोचर होता है। आवश्यकता इस बात की है कि हम चुनौतियों को केवल संकट न मानें, बल्कि उन्हें आत्ममंथन और नवसृजन का अवसर समझें।

१. नई पीढ़ी का धर्म से दूर होना :

वर्तमान समय की सबसे बड़ी चुनौती यह है कि युवावर्ग का एक बड़ा हिस्सा धार्मिक अध्ययन, स्वाध्याय और आध्यात्मिक साधना से दूर होता जा रहा है। आधुनिक शिक्षा, डिजिटल संस्कृति और उपभोक्तावादी जीवनशैली ने उसके चिंतन को भौतिक उपलब्धियों तक सीमित कर दिया है।

जब धर्म केवल अनुष्ठानों तक सीमित हो जाए और उसके दार्शनिक एवं वैज्ञानिक पक्ष से युवाओं का परिचय न हो, तब स्वाभाविक रूप से दूरी बढ़ती है। समाधान यही है कि जैन सिद्धांतों को आधुनिक भाषा, तकनीक और वैज्ञानिक तर्कों के साथ युवाओं तक पहुँचाया जाए। डिजिटल प्लेटफॉर्म, ई-ग्रंथ, पॉडकास्ट, वेबिनार और रचनात्मक संवाद आज की आवश्यकता हैं।

२. सांप्रदायिक विभाजन और संगठनात्मक विखंडन :

जैन समाज की शक्ति उसकी एकता में निहित रही है, किंतु समय के साथ विभिन्न परम्पराओं, उपसंप्रदायों और क्षेत्रीय आग्रहों ने अनेक प्रकार के विभाजन उत्पन्न किए हैं। जब पहचान धर्म से अधिक संप्रदाय की हो जाती है, तब सामूहिक चेतना दुर्बल पड़ने लगती है।

समाधान अनेकांतवाद की उसी मूल भावना में निहित है, जिसे जैन दर्शन ने विश्व को प्रदान किया। मतभेद स्वाभाविक हैं, परन्तु मनभेद विनाशकारी। यदि हम "जिनशासन सर्वोपरि" के भाव को आत्मसात करें, तो विविधता भी हमारी शक्ति बन सकती है।

३. नैतिक मूल्यों का ह्रास :

अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, संयम और करुणा जैन जीवन के आधारस्तंभ हैं। किंतु आधुनिक उपभोक्तावाद ने संग्रह, प्रदर्शन और प्रतिस्पर्धा को जीवन का आदर्श बना दिया है। परिणामस्वरूप नैतिकता का स्थान सुविधावाद ने ले लिया है।

जैन समाज को केवल धार्मिक आयोजनों तक सीमित न रहकर नैतिक शिक्षा, संस्कार शिविर, पारिवारिक संवाद और जीवनमूल्यों के प्रसार पर विशेष बल देना होगा। बच्चों को केवल सफलता नहीं, सदाचार का पाठ भी पढ़ाना होगा।

४. भाषा और शास्त्रीय अध्ययन की चुनौती :

प्राकृत, संस्कृत और अपभ्रंश जैसी भाषाएँ जैन वाङ्मय की आत्मा हैं। आज इन भाषाओं के ज्ञाताओं की संख्या निरंतर घट रही है। यदि यह क्रम जारी रहा, तो भविष्य की पीढ़ियाँ अपने मूल ग्रंथों से प्रत्यक्ष रूप से वंचित हो जाएँगी।

इस संकट का समाधान :आधुनिक अनुवाद, शोध, ऑनलाइन पाठ्यक्रम और प्राकृत अध्ययन केन्द्रों की स्थापना में निहित है। शास्त्रों का सरलीकरण हो, परंतु उनकी आत्मा अक्षुण्ण बनी रहे—यही हमारा प्रयत्न होना चाहिए।

५. धार्मिक आडंबर और प्रदर्शन की प्रवृत्ति :

धर्म का मूल उद्देश्य आत्मशुद्धि है, प्रदर्शन नहीं। दुर्भाग्यवश आज अनेक धार्मिक आयोजनों में भव्यता और प्रतिस्पर्धा का स्वर अधिक सुनाई देता है, जबकि साधना और आत्मनिरीक्षण का पक्ष पीछे छूटता जा रहा है। भगवान महावीर का संदेश सादगी, संयम और अंतर्मुखता का था। अतः धार्मिक कार्यक्रमों में बाह्य वैभव से अधिक आध्यात्मिक गहराई को महत्व देना समय की मांग है।

६. पर्यावरण और जीव संरक्षण की चुनौती :

आज संपूर्ण विश्व पर्यावरण संकट से जूझ रहा है। जल, वन, भूमि और जैव विविधता का निरंतर क्षरण मानव अस्तित्व के लिए खतरा बनता जा रहा है। ऐसे समय में जैनधर्म का अहिंसा और जीवदया का सिद्धांत वैश्विक समाधान प्रस्तुत करता है।

जैन समाज को वृक्षारोपण, जल संरक्षण, जैविक खेती, पशु-पक्षी संरक्षण और पर्यावरणीय जागरूकता के कार्यक्रमों को अपने धार्मिक जीवन का अभिन्न अंग बनाना चाहिए।

शेष पृष्ठ 21 पर ......

आचार्य श्री शांतिसागर जी छाणी की समाधि स्थली के जीर्णोद्धार हेतु भूमि पूजन समारोह सागवाड़ा में संपन्न
चार माह में निर्माण पूर्ण करने का संकल्प

- राजेन्द्र जैन 'महावीर', सनावद

सागवाड़ा। प्रशम मूर्ति आचार्य शांतिसागर छाणी महाराज की पावन समाधि स्थली के जीर्णोद्धार कार्य के शुभारंभ हेतु 1जुलाई बुधवार को प्रातः छोटी नसिया, सागवाड़ा में श्रद्धा एवं भक्ति के साथ भूमि पूजन समारोह संपन्न हुआ।

समाधि स्थली के जीर्णोद्धार की प्रेरणा भारत गौरव आर्यिका रत्न 105 श्री स्वस्ति भूषण माताजी से प्राप्त हुई। कार्यक्रम का मार्गदर्शन आचार्य पदारोहण शताब्दी वर्ष समिति के अध्यक्ष हसमुख जैन गांधी (इंदौर) ने किया।

आचार्य पदारोहण शताब्दी वर्ष प्रारम्भ से पहले पूर्ण होगा जीर्णोद्धार : हसमुख जैन गांधी

अध्यक्ष हसमुख जैन गांधी ने कहा कि आचार्य शांतिसागर जी महाराज के आचार्य पदारोहण शताब्दी वर्ष के औपचारिक शुभारंभ से पूर्व ही समाधि स्थल का जीर्णोद्धार पूर्ण करने का संकल्प लिया गया है। पूज्य आर्यिकारत्न 105 श्री स्वस्तिभूषण माताजी की पावन प्रेरणा से प्रारंभ हुए इस कार्य का उद्देश्य समाधि स्थल को विश्वस्तरीय स्वरूप प्रदान करना है। उन्होंने कहा कि आगामी एक वर्ष तक देशभर में आचार्य पदारोहण शताब्दी वर्ष के विविध कार्यक्रम आयोजित होंगे तथा आचार्य शांतिसागर जी महाराज के तप, त्याग एवं आदर्शों का व्यापक प्रचार-प्रसार किया जाएगा। हमारा प्रयास है कि यह समाधि स्थल देश-विदेश के श्रद्धालुओं के लिए प्रेरणास्थल के रूप में विकसित हो।

विश्वस्तरीय स्वरूप में विकसित होगी समाधि स्थली-दिनेश खोडनिया

समारोह में जैन समाज के वरिष्ठ नेता एवं राजस्थान सरकार के पूर्व राज्य मंत्री दिनेश खोड़निया ने चरण-छत्री स्मारक एवं समाधि स्थली के ऐतिहासिक महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आचार्य शांतिसागर जी महाराज समाज के गौरव थे। उन्होंने सागवाड़ा में मुनि दीक्षा ली और दो चातुर्मास भी किए तथा यहीं समाधि को प्राप्त हुए। इसलिए यह स्थान संपूर्ण जैन समाज की अमूल्य धरोहर है।

समिति के महामंत्री ज्ञानेंद्र जैन (जहाजपुर) ने कहा कि समाधि स्थल के जीर्णोद्धार में धन की कोई कमी नहीं आने दी जाएगी। सागवाड़ा समाज के सहयोग से इस कार्य को सर्वोत्तम रूप दिया जाएगा।

इस अवसर पर राजेन्द्र जैन महावीर ने कहा कि आचार्य शांतिसागर जी महाराज उत्तर भारत में दिगम्बर जैन परंपरा के पुनर्जागरण के महानायक थे। सागवाड़ा से उनका संबंध इस नगर एवं समाज के लिए गौरव का विषय है। उनका जीवन-दर्शन आज भी संपूर्ण समाज को धर्म, त्याग और साधना की प्रेरणा देता है।

शताब्दी वर्ष समारोह समिति के मंत्री शरद पानोत ने भी अपने विचार व्यक्त किए। समाज के वरिष्ठजनों ने समाधि स्थल को भव्य स्वरूप देने तथा वहां गुरु मंदिर के निर्माण के संबंध में महत्वपूर्ण सुझाव दिए। महिला नेत्री श्रीमती साधना कोठारी एवं समाज के सेठ महेश नोगामिया ने भी अपने विचार रखे।

कार्यक्रम का संचालन दिनेश खोड़निया ने किया। समारोह के उपरांत सभी श्रद्धालुओं ने छोटी नसिया स्थित सभी समाधियों के दर्शन किए तथा अल्प समय में हुए विकास कार्यों के लिए सागवाड़ा समाज एवं समिति का आभार व्यक्त किया।

सागवाड़ा से शुरू हुई तप परंपरा, आज 225 से अधिक संत कर रहे धर्म प्रभावना

उल्लेखनीय है कि आचार्य शांतिसागर छाणी जी महाराज ने वर्ष 1923 में सागवाड़ा की पावन भूमि पर मुनि दीक्षा ग्रहण की थी। वर्ष 1926 में बिहार के गिरिडीह में चातुर्मास के दौरान उन्हें आचार्य पद से विभूषित किया गया। उन्होंने दिगम्बर जैन परंपरा के पुनर्जागरण में ऐतिहासिक योगदान दिया। आज उनके शिष्य-प्रशिष्य की गौरवशाली परंपरा पूरे देश में धर्म प्रभावना कर रही है। वर्तमान में उनकी शिष्य परंपरा के 225 से अधिक दिगम्बर जैन संत-साध्वियाँ देश-विदेश में जैन धर्म, तप, संयम एवं अहिंसा का संदेश जन-जन तक पहुँचा रहे हैं। इसी गौरवशाली परंपरा के सम्मान एवं संरक्षण के उद्देश्य से सागवाड़ा स्थित उनकी समाधि स्थली का भव्य जीर्णोद्धार किया जा रहा है।

इस अवसर पर श्री समाज सागवाड़ा के सेठ महेश नोगामिया, जीर्णोद्धार समिति के अध्यक्ष आदिश खोड़निया, ट्रस्टी अश्विन बोवड़ा, संतोष खोड़निया, रितेश कोठारी, राजेंद्र पंचोली एवं दिनेश मेहता सहित समस्त पंच महाजन, दशा हूमड़ दिगम्बर जैन समाज एवं आचार्य शांतिसागर जी स्मारक स्थली समिति के पदाधिकारी के साथ मौजूद रहे।

समारोह में नटवरलाल मुंशी, राजमल शाह, कन्हैयालाल मेहता, नरेंद्र खोड़निया, कीर्ति शाह, डॉ. राजकुमार, साधना कोठारी, विजयकुमार जैन, डॉ. राजकुमार दोसी, वनिता शाह, हिरेन खोड़निया, अमित खोड़निया, निकुंज वरवारिया, चिराग बोवड़ा, अनिरुद्ध शाह, विनय सेठ, मितेश शाह, हितेन्द्र सारगिया, दिलीप जैन, हेमंत शाह, कान्तिलाल बोवड़ा, पंडित जनक जैन, हेमंत मेहता, महावीर प्रसाद जैन, लक्ष्मीलाल टोंग्या, देवीलाल जैन जमौली, शरद पानोत, राजेन्द्र जैन महावीर, रजनीश जैन सहित बड़ी संख्या में समाजजन उपस्थित रहे।

समारोह के अंत में सभी ने आचार्य शांतिसागर छाणी जी महाराज के तप, त्याग एवं आध्यात्मिक अवदान का स्मरण करते हुए समाधि स्थली के शीघ्र एवं भव्य जीर्णोद्धार की मंगलकामना की तथा धर्म प्रभावना के संकल्प के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

ज्ञातव्य है कि परम पूज्य गणिनी आर्यिका श्री स्वस्ति भूषण माताजी कि प्रेरणा से उनके ही मार्गदर्शन में छाणी महाराज आचार्य पदारोहण शताब्दी वर्ष 2026-27 में मनाया जाएगा।

पृष्ठ 19 से शेष ......

धर्म तब ही सार्थक होगा, जब वह समस्त जीवजगत के प्रति करुणा का व्यवहारिक रूप धारण करेगा।

७. जनसंख्या और सामाजिक सहभागिता का प्रश्न :

संख्यात्मक दृष्टि से जैन समाज अल्पसंख्यक है। यदि सामाजिक सहभागिता, शिक्षा और संगठनात्मक चेतना कमजोर होती गई, तो आने वाले समय में अनेक संस्थाएँ और परम्पराएँ संकटग्रस्त हो सकती हैं। आवश्यक है कि समाज शिक्षा, सेवा, साहित्य, चिकित्सा और सामाजिक उत्थान के क्षेत्रों में अधिक सक्रिय भूमिका निभाए। जब समाज राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान बढ़ाता है, तब उसकी सांस्कृतिक पहचान भी सुदृढ़ होती है।

समाधान का समग्र दृष्टिकोण : जैनधर्म के समक्ष उपस्थित चुनौतियों का समाधान किसी एक व्यक्ति, संस्था अथवा आचार्य के प्रयासों से संभव नहीं है। इसके लिए सामूहिक चेतना, दूरदर्शिता और सकारात्मक संकल्प की आवश्यकता है।

हमें—युवाओं को धर्म से जोड़ना होगा।

परिवारों में संस्कारों का पुनर्जागरण करना होगा।

अनेकांत और समन्वय की भावना को व्यवहार में उतारना होगा।शास्त्रीय अध्ययन और शोध को प्रोत्साहित करना होगा। सेवा और सामाजिक उत्तरदायित्व को जीवन का अंग बनाना होगा।

वास्तव में, जैनधर्म की शक्ति उसके सिद्धांतों में है, और ये सिद्धांत आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने हजारों वर्ष पूर्व थे। आवश्यकता केवल उन्हें जीवन में उतारने की है।

चुनौतियाँ कभी किसी संस्कृति का अंत नहीं करतीं; वे उसकी जीवटता और आत्मबल की परीक्षा लेती हैं। जैनधर्म ने अनंत काल से अनेक उतार-चढ़ाव देखे हैं, परंतु उसकी अहिंसा, करुणा और आत्मविजय की ज्योति कभी मंद नहीं हुई।

यदि जैन समाज आत्ममंथन, एकता और नवाचार के साथ आगे बढ़े, तो वर्तमान चुनौतियाँ ही भविष्य के नवजागरण का आधार बन सकती हैं। क्योंकि जिनशासन का मूल संदेश आज भी उतना ही अमर है—"स्वयं को जीतना ही संसार की सबसे बड़ी विजय है।" और जब समाज आत्मविजय की इस साधना को अपनाएगा, तब कोई भी चुनौती उसके मार्ग की बाधा नहीं, बल्कि उसके उत्कर्ष का सेतु बन जाएगी।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं दिल्ली प्रदेश अंचल के पदाधिकारियों की महत्वपूर्ण बैठक सम्पन्न

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं दिल्ली प्रदेश अंचल के पदाधिकारियों की महत्वपूर्ण बैठक श्रुत पंचमी के पावन अवसर पर दिनांक 18 जून 2026 को पूज्य आचार्यश्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के पावन सान्निध्य एवं मंगल आशीर्वाद से एतिहासिक श्री दिगम्बर जैन लाल मन्दिर जी मे आयोजित की गईबैठक का उद्देश्य कमेटी के 125 वें स्थापना दिवस कार्यक्रमों में जैन तीर्थों एवं प्राचीन जिनालयों के संरक्षण, सुरक्षा, सुव्यवस्थित प्रबंधन तथा उनके समग्र विकास तथा विभिन्न कार्य योजनाओ की रूपरेखा तैयार करना था। बैठक में विभिन्न बिंदुओं पर संबंधित वर्तमान परिस्थितियों, उनके समक्ष उपस्थित चुनौतियों तथा उनके समाधान के लिए आवश्यक कदमों पर विस्तृत एवं सार्थक विचार-विमर्श हुआ।पूज्य आचार्यश्री 108 सौरभ सागर जी महाराज ने अपने प्रेरणादायी उद्बोधन में कहा कि तीर्थ केवल पूजा-अर्चना के केंद्र नहीं, बल्कि हमारी आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक धरोहर हैं। उनका संरक्षण प्रत्येक जैन समाज का परम कर्तव्य है। उन्होंने समाज के प्रत्येक वर्ग से तीर्थ रक्षा, सेवा, सहयोग और संगठन की भावना को सुदृढ़ करने का आह्वान किया।बैठक में भारत वर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष द्वारा संचालित विभिन्न गतिविधियों की समीक्षा भी की गई तथा भविष्य में तीर्थ संरक्षण, विधिक सहायता, जनजागरण, संगठन विस्तार और समाज की सक्रिय भागीदारी को बढ़ाने हेतु अनेक महत्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत किए गए।दिल्ली अंचल के पदाधिकारियों ने अपने-अपने अनुभव व साझा करते हुए तीर्थों के संरक्षण एवं विकास से संबंधित विषयों तथा 125 वें स्थापना वर्ष के कार्यक्रमों की रूपरेखा पर विचार करते हुए कमेटी के साथ समन्वित रूप से कार्य करने का संकल्प व्यक्त किया।बैठक सौहार्दपूर्ण एवं सकारात्मक वातावरण में सम्पन्न हुई। इसी मध्य लाल मन्दिर से श्री नीरज जैन, शक्तकोत्तर रजत स्थापना वर्ष कमेटी के दिल्ली प्रदेश के चेयरमैन श्री पुनीत जैन लाल मंदिर तथा उपस्थित अन्य सभी सदस्यों ने दिनांक 16 जून को भारतीय जनता पार्टी की भूतपूर्व नेत्री श्री मति मेनका गाँधी द्वारा आचार्य श्री के समक्ष मयूर पंखी पिच्छी के विरोध मे अनर्गल शब्दो में किए गए वार्तालाप का पुरजोर रूप से विरोध व्यक्त किया। जिस पर गुरुजी का मार्गदर्शन भी प्राप्त हुआ।गुरुवर के चरणो मे तीर्थों की सुरक्षा, संरक्षण एवं विकास के लिए पूर्ण समर्पण और एकजुटता के साथ कार्य करने का संकल्प लियाबैठक में निम्न लिखित बिंदुओं पर क्रमवार विस्तृत चर्चा हुईदिनांकः-11.07.2026 को हीदिल्ली प्रदेश अंचल के चेयरमैन श्री पुनीत जैन, संयोजक श्री नीरज जैन, श्री पुनीत जैन दिगम्बर, श्री कमल जैन पलवल, श्री राजेश जैन पुष्पांजलि, श्री हेम चंद जैन विवेक जैन, श्री

विक्रांत जैन, श्रीमती सुनंदा जैन, श्री पुनीत बॉबी जैन आदि उपस्थित सभी पदाधिकारियों के साथ राष्ट्रीय चेयरमैन श्री जवाहर लाल जैन एवं श्रीमती मीनू जैन आदि की श्री दिगम्बर जैन लाल मंदिर जी मे दिनांक 07.06.2026 को हुई शतकोतर रजत स्थापना वर्ष महोत्सव की तैयारियों के संबंध में चर्चित बिन्दुः-

1. श्री दिगम्बर जैन लाल मंदिर जी में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के शतकोतर रजत स्थापना महोत्सव के संबंध में काउन्टर बनवाना।
2. आई.ए.एस., आई.पी.एस. आदि अन्य अधिकारिक व्यक्तियों को जोडना।
3. दिल्ली के जैन सी.ए. की लिस्ट।
4. सा ॅफ्टवेयर बनवाने के संबंध में।
5. दिल्ली के जैन मंदिरों की सूचि।
6. दिल्ली का डाटाबेस बनवाने के संबंध में।
7. उद्योगपति सम्मेलन।
8. महिला सम्मेलन।
9. युवाओं को जोडने के संबंध में (youngster club)
10. जैन रोजगार मेला..........
11. दिल्ली के दिगम्बर जैन मंदिरो के अध्यक्ष एवं महामंत्री की सूचि।
12. दिल्ली, हरियाणा, पंजाब के उद्योगपतियो की सूचि।
13. दिल्ली में जहां-जहां चार्तुमास हो रहे है, वहां पर महाराज जी के सान्निध्य में तीर्थक्षेत्र कमेटी की मिटिंग करना।
14. दिल्ली ऑफिस में यथोचित स्टाफ की नियुक्ति।
15. दिल्ली अंचल से अधिक से अधिक तीर्थ चक्रवर्ती बनाना आदि पर विचार विमर्श किया गयातत्पश्चात श्री जी स्तुति के साथ बैठक को विराम दिया गया।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की दो दिवसीय बैठक संपन्न

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की दो दिवसीय राष्ट्रीय पदाधिकारी परिषद की बैठक दिनांक 4 एवं 5 जुलाई 2026 को अत्यंत गरिमामयी माहौल में संपन्न हुई। इस बैठक के प्रथम दिन का शुभारंभ **श्री ढाईद्वीप जिनायतन, इंदौर** की पावन धरा पर राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री विजय जैन की अध्यक्षता में पारंपरिक मांगलिक क्रियाओं और दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। बैठक में देश भर के दिगम्बर जैन तीर्थों के संरक्षण, विकास और विधिक स्थितियों को लेकर कई ऐतिहासिक एवं नीतिगत निर्णय लिए गए एवं भावी विकास योजनाओं को लेकर गहन विचार-विमर्श किया गया। वहीं, द्वितीय दिन (5 जुलाई) की महत्वपूर्ण संगठनात्मक चर्चाएं और सत्र **श्री अतिशय क्षेत्र बनेडिया जी (म.प्र.)** की पावन धरा पर श्री जवाहरलाल जैन जी की अध्यक्षता में पूरे भक्तिभाव के साथ संपन्न हुए।

'मध्यांचल महापरिवार' को मिला आतिथ्य का गौरव- इस दो दिवसीय गरिमापूर्ण आयोजन की संपूर्ण व्यवस्थाओं को कुशलतापूर्वक संभालने और पधारे हुए राष्ट्रीय व क्षेत्रीय अतिथियों के भावभीने सत्कार का सौभाग्य **'मध्यांचल महापरिवार'** को प्राप्त हुआ। महापरिवार के सभी सदस्यों ने पूरी निष्ठा, समर्पण और भारतीय संस्कृति के अनुरूप अतिथियों का स्वागत-अभिनंदन किया। मध्यांचल महापरिवार के इस सुन्दर आतिथ्य और कुशल प्रबंधन की उपस्थित सभी वरिष्ठ पदाधिकारियों और समाजश्रेष्ठियों ने मुक्त कंठ से सराहना की।

बैठक के दौरान देश भर के दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्रों की सुरक्षा, यात्रियों की सुविधाओं में विस्तार और समाज की एकजुटता को लेकर कई ऐतिहासिक एवं दूरगामी निर्णय लिए गए। कार्यक्रम का समापन सामूहिक मांगलिक आरती और समाज गौरव की मंगल कामना के साथ हुआ। सभी पदाधिकारियों ने इस सफल आयोजन के लिए कृतज्ञता व्यक्त की।

प्रमुख महातीर्थों की कानूनी स्थिति पर चिंतन'- बैठक में सम्मेदशिखरजी, गिरनार जी और अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ शिरपुर जैसे प्रमुख महातीर्थों की देश के सर्वोच्च न्यायालय (Supreme Court) एवं

विभिन्न उच्च न्यायालयों में चल रहे मुकदमों की वर्तमान कानूनी स्थिति की समीक्षा की गई। मीटिंग में उपस्थित राष्ट्रीय मंत्री श्री वीरेश सेठ जबलपुर ने श्री सम्मेदशिखरजी, श्री अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ शिरपुर क्षेत्रों पर चल रहे मुकदमों की विधिवत स्थिति सभा के समक्ष रखी एवं आगे के लिए ठोस निर्णय एवं योजनाओं पर विस्तार से प्रकाश डाला। वहीँ गुजरात अंचल के अध्यक्ष एवं गिरनार जी क्षेत्र से जुड़े श्री पारस जैन बज ने श्री गिरनार जी क्षेत्र पर दिगम्बर जैनों की ओर से किये जा रहे प्रयत्न एवं आगे की कार्यवाही के बारे में अपनी बात रखी तथा सभा में उपस्थित महानुभावों की शंकाओं का समाधान भी किया गया । महामंत्री श्री संतोष जैन पेंढारी ने बताया कि शिखरजी केस की प्रभावी पैरवी के लिए एक नए विधिक पैनल (Legal Panel) और वरिष्ठ अधिवक्ताओं से समन्वय की ठोस कार्ययोजना तैयार की गई है।

देशव्यापी जन-जागरण और तीर्थरक्षा कलश योजना: वर्ष 2026 के आगामी चातुर्मास के पावन अवसर पर देश भर में जन-जागरण और संस्कृति के संरक्षण हेतु **'तीर्थरक्षा कलश योजना'** के देशव्यापी प्रवर्तन और इसके रूट निर्धारण पर सामूहिक चर्चा की गई। सभा में उपस्थित विभिन्न अंचलों से पधारे पदाधिकारियों ने अपने-अपने प्रभावी क्षेत्रों में जहाँ-जहाँ चातुर्मास हो रहे हैं वहां तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा कलश स्थापित करवाने का आश्वासन दिया।

मासिक पत्रिका 'जैन तीर्थवंदना' के नियमित प्रकाशन पर लगी नीतिगत मुहर - कमेटी की आधिकारिक मासिक पत्रिका 'जैन तीर्थवंदना' के नियमित और सुचारु प्रकाशन को लेकर पदाधिकारी परिषद की बैठक में एक बेहद महत्वपूर्ण और सकारात्मक निर्णय लिया गया। संपूर्ण सदन और उपस्थित समाज ने इस मासिक पत्रिका को जैन संस्कृति के प्रचार-प्रसार तथा तीर्थों की जानकारी जन-जन तक पहुँचाने के लिए एक अत्यंत उपयोगी माध्यम समझा। इसी क्रम में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री संजय पापड़ीवाल तथा राष्ट्रीय मंत्री श्री वीरेश सेठ आदि वरिष्ठ पदाधिकारियों ने पत्रिका के नियमित प्रकाशन के विचार का पुरजोर समर्थन किया और इसे समाज हित में एक बेहतरीन कदम बताया।

इस बैठक में तीर्थक्षेत्र कमेटी के माननीय सदस्य एवं भारत वर्षीय दिग. जैन महासमिति के अध्यक्ष श्री अशोक जी बड़जात्या ने पावर पॉइंट के माध्यम से तीर्थक्षेत्र कमेटी को सामाजिक राजनीतिक और आर्थिक दृढ़ता प्रदान करने के संबंध में अपनी प्रेजेंटेशन सदन में दी।

इस दौरान पत्रिका के प्रकाशन को सुदृढ़ बनाने के लिए कई महत्वपूर्ण सहयोग पत्र भी सदन के सम्मुख प्रस्तुत किए गए, जिसमें राजश्री प्रोडक्शंस (मुंबई) के श्री कमल बडजात्या की ओर से प्राप्त पूर्ण समर्थन का पत्र भी शामिल था। अन्य समाजश्रेष्टियों और सभी वरिष्ठों से प्राप्त इन पत्रों व व्यापक सहमति के आधार पर परिषद ने 'जैन तीर्थवंदना' पत्रिका के नियमित व सुचारु प्रकाशन के प्रस्ताव को सहर्ष अपनी अंतिम नीतिगत स्वीकृति प्रदान की।

शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष के भव्य कार्यक्रमों की रूपरेखा पर हुआ गहन मंथन

बैठक के एक अन्य विशेष सत्र में कमेटी के गौरवशाली शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष (125वें वर्ष) के उपलक्ष्य में आयोजित होने वाले आगामी भव्य कार्यक्रमों की विस्तृत कार्ययोजना पर गंभीर चर्चा की गई। इस ऐतिहासिक वर्ष को गरिमापूर्ण तरीके से मनाने के लिए तैयार की गई रूपरेखा और विशेष आयोजनों की सूची सदन के सम्मुख विचारार्थ प्रस्तुत की गई। इसके साथ ही, जैन समाज और तीर्थों के संरक्षण में अतुलनीय योगदान देने वाले महानुभावों को सम्मानित करने के उद्देश्य से 'तीर्थचक्रवर्ती' उपाधि के लिए चयनित योग्य नामों की सूची भी चर्चा और अंतिम निर्णय हेतु सभी वरिष्ठ पदाधिकारियों के समक्ष रखी गई, जिसे पूरे सदन ने समाज की प्रभावना के लिए एक ऐतिहासिक कदम बताया।

बैठक के समापन सत्र में, उपस्थित सभी पदाधिकारियों और समाजश्रेष्ठियों ने अत्यंत भावुक माहौल में शोक संवेदनाएं व्यक्त कीं। प्रधान कार्यालय मुंबई के कुशल प्रबंधक स्वर्गीय श्री उमानाथ जी दुबे तथा मध्यांचल अध्यक्ष श्री डी.के. जैन की पूज्य माताश्री के दुखद निधन पर गहरा दुःख प्रकट किया गया। संपूर्ण सदन ने इन पुण्यात्माओं के प्रति अपनी कृतज्ञता और आदर भाव व्यक्त करते हुए दो मिनट का मौन रखकर णमोकार मंत्र का जाप कर उन्हें सामूहिक रूप से भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की इस दो दिवसीय गरिमापूर्ण बैठक में तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय पदाधिकारियों में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री विजय जैन अहमदाबाद, श्री संजय जैन पापडीवाल, महामंत्री श्री संतोष पेंढारी, नागपुर, राष्ट्रीय मंत्री श्री वीरेश सेठ, जबलपुर (दमोह), श्री हंसमुख जैन गांधी, महासमिति के अध्यक्ष श्री अशोक जैन बडजात्या, इंदौर, देश के विभिन्न अंचलों से आए वरिष्ठ पदाधिकारियों में

श्री जवाहरलाल जैन अध्यक्ष – उत्तरप्रदेश एवं उत्तराखण्ड अंचल, श्री विनोद जैन बाकलीवाल अध्यक्ष कर्नाटक अंचल, श्री मिहिर गाँधी, अध्यक्ष महाराष्ट्र अंचल, श्री पारस जैन बज, अध्यक्ष- गुजरात अंचल, श्री प्रभात सेठी- महामंत्री पूर्वांचल, श्री राजकुमार घाटे, महामंत्री मध्यांचल, श्री अनिल जमगे- राष्ट्रीय चेयरमेन- जीर्णोधार समिति, श्री जैनेश झांझरी- राष्ट्रीय चेयरमैन सर्वेक्षण समिति, श्री संतोष जैन घड़ी कार्याध्यक्ष मध्यांचल इनके साथ ही भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS) के वरिष्ठ अधिकारी श्री सुरेश जी (भोपाल) ने भी अपनी गरिमामयी उपस्थिति से बैठक की शोभा बढ़ाई।

दिल्ली से श्री नीरज जैन, श्री पुनीत जैन, श्री शरद जैन चेनल महालक्ष्मी, गाजियाबाद से श्रीमती मीनू जैन अकलुज (महाराष्ट्र) से श्री प्रीतम आर. दोरा व श्री दहिवड़ी से श्री भूपेश प्रताप गांधी, कुंडल से श्री दर्शन हणगांडी व श्री दीपक मनोहर चौगे, सोलापुर से महेश्वर से श्री महेन्द्र जैन बड़जात्या, बनेडिया जी तीर्थ से श्री सुरेन्द्र बाकलीवाल उपस्थित रहे।

तीर्थधाम इंदौर और मध्यप्रदेश अंचल से भी बड़ी संख्या में प्रबुद्धजनों ने हिस्सा लिया, जिनमें डॉ. अनुपम जैन, श्री धनेश जैन (इंदौर), श्री रितिका जैन (बड़वानी), श्री कैलाश सोनी, श्री भूपेश जैन, श्री मांगीलाल जैन (रतलाम), श्री अजय बाकलीवाल (रतलाम), श्री अमिताभ मान्या जैन (उपाध्यक्ष मध्यांचल), श्री चिन्मय जैन, श्री दर्शन हणगांडी, श्री विजय जैन, श्री ऋषभ पाटनी, श्री देव कुमार जैन, श्री दिनेश कुमार जैन (सिंघई), श्री अशोक कुमार जैन (शाह), श्री मनोज जैन (गप्पादु), डॉ. जे.के. जैन (ढाईद्वीप), बक्सवाहा (छतरपुर) से श्री राजेश जैन रागी, श्री पवन पाटौदी, श्री राजेश झांझरी, श्री प्रमोद पाटनी जैन, श्री अनिल जैन एवं श्री वीरेन्द्र बड़जात्या शामिल रहे। बैठक के दौरान इन सभी वरिष्ठों ने तीर्थों के विकास और सुरक्षा से जुड़े विभिन्न महत्वपूर्ण एजेंडों पर अपने अमूल्य सुझाव और मार्गदर्शन प्रदान किए।

सुमितिधाम, गोम्मटगिरि, ग्रेटर बाबा एवं बनेड़िया जी अतिशय क्षेत्र वंदना के साथ राष्ट्रीय पदाधिकारियों का हुआ भव्य स्वागत

बैठक के समानांतर राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने इंदौर स्थित पावन **सुमितिधाम मंदिर** के दर्शन कर भक्तिभाव के साथ वंदना की। इस अवसर पर पदाधिकारियों ने समाजश्रेष्ठी श्री मनीष गोधा एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सपना गोधा से आत्मीय भेंट की, जहाँ गोधा परिवार द्वारा पधारे हुए सभी अतिथियों का अत्यंत गर्मजोशी से स्वागत-अभिनंदन किया गया। इस मुलाकात के दौरान जैन तीर्थों से जुड़े अनेक महत्वपूर्ण पहलुओं और भावी विकास योजनाओं पर गहन वैचारिक मंथन हुआ, जिसमें डिजिटल माध्यमों पर सबसे ज्यादा जोर दिया गया।

इसी वंदना क्रम को आगे बढ़ाते हुए राष्ट्रीय पदाधिकारियों का दल प्रसिद्ध अतिशय क्षेत्र **गोम्मटगिरि** भी पहुँचा, जहाँ सभी ने भगवान बाहुबली की गगनचुंबी प्रतिमा के दर्शन कर सामूहिक वंदना की। इसके पश्चात् सभी पदाधिकारी **ग्रेटर बाबा अतिशय क्षेत्र** पहुँचे, जहाँ उन्होंने देव-दर्शन कर धर्म लाभ लिया और श्री नरेन्द्र जैन वेद द्वारा सभी का भावभीना स्वागत-सत्कार किया गया।

इसी तीर्थ भ्रमण के क्रम में, अगले दिन राष्ट्रीय पदाधिकारियों का यह प्रतिनिधिमंडल **श्री अतिशय क्षेत्र बनेडिया जी (म.प्र.)** पहुँचा। पावन धरा पर आगमन के पश्चात् सभी वरिष्ठ पदाधिकारियों और समाजश्रेष्ठियों ने मंदिर जी में विराजमान जिनबिंबों के दर्शन-पूजन किए और सामूहिक रूप से मंगल आरती कर धर्म लाभ लिया। दर्शन के उपरांत पदाधिकारियों ने बनेडिया जी तीर्थ क्षेत्र के जीर्णोद्धार, यात्रियों की सुविधाओं के विस्तार और आगामी विकास योजनाओं पर भी विस्तृत चर्चा की।

भा. दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, मुम्बई
द्वारा आयोजित
व्यावहारिक सुझाव/निबन्ध प्रतियोगिता

भा. दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा आगामी शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष कार्यक्रमों की श्रृंखला में 2 प्रतियोगिताऐं आयोजित की जा रही हैं।

- **युवा वर्ग (45 वर्ष से कम) - व्यावहारिक सुझाव प्रतियोगिता, विषय:- ''तीर्थों का विकास कैसे हो?''**
  शब्द सीमा - 1,000 शब्द
- **प्रौढ़ वर्ग (45 वर्ष से अधिक) - निबन्ध प्रतियोगिता, विषय:- 'तीर्थों के सम्मुख चुनौतियाँ एवं समाधान'**
  शब्द सीमा - 3,000 शब्द

- दोनों वर्गों के लिए पुरस्कार अलग अलग हैं।
- प्रविष्टि भेजने की अन्तिम तिथि **30.09.26** हैं।
- प्रविष्टि ए-4 आकार के कागज पर कम्प्यूटर कम्पोज कराकर अथवा सुवाच्य हस्तलिपि में भेजी जानी चाहिए। केवल बाहर के पृष्ठ पर नाम, पता, फोन नं. लिखें, अन्दर कहीं न लिखें।
- स्त्री - पुरूष का कोई भेद नहीं है। भारत का कोई भी नागरिक प्रविष्टि भेज सकता है।
- भाषा हिन्दी या अंग्रेजी में से किसी भी भाषा में मान्य है।
- आयु के प्रमाण स्वरूप आधार कार्ड की छाया प्रति साथ भेजें। अथवा कोई अन्य प्रमाणपत्र जिसमें जन्मतिथि अंकित हो। आयु की गणना 31 मार्च 2026 को की जायेगी।
- **पुरस्कार राशि -**

पुरस्कार राशि -	**प्रथम रु.**	:	**21,000.00**
दोनों वर्गों हेतु	**द्वितीय रु.**	:	**15,000.00**
अलग-अलग	**तृतीय रु.**	:	**11,000.00**

- **आवश्यकतानुसार सांत्वना पुरस्कार भी घोषित किये जा सकते हैं।**
- प्रविष्टि पंजीकृत डाक से भेजने का पता : - डॉ. अनुपम जैन,
  प्रधान सम्पादक - जैन तीर्थ वन्दना
  ज्ञानछाया, डी.14, सुदामा नगर
  इन्दौर 452009
  मोबा. 94250 53822, 95898 83822
- सभी विषयों में अध्यक्ष का निर्णय अन्तिम होगा।

जम्बूप्रसाद जैन
अध्यक्ष

संतोष जैन पेंढ़ारी
महामंत्री

जवाहरलाल जैन
चेयरमेन-शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष कार्यक्रम समिति

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की तीर्थ चक्रवर्ती योजना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के 125 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष समारोह के अवसर पर तीर्थक्षेत्र कमेटी को आर्थिक दृढ़ता प्रदान करने उद्देश्य की पूर्ति हेतु 1 लाख रूपए की राशि प्रदान करने वाले महानुभावों को तीर्थ चक्रवर्ती पद से सुशोभित किया जा रहा है। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी से सम्बद्ध तीर्थक्षेत्रों के संरक्षण| संवर्द्धन सुरक्षा तथा व्यवस्था को सुदृढ़ होना अत्यन्त आवश्यक है। इस उदे्श्य की पूर्ति हेतु अधिक से अधिक श्रावकों धर्म प्रेमियों तथा तीर्थ रक्षकों को तीर्थक्षेत्र कमेटी से मन से जुड़ने की अत्यधिक आवश्यकता है।

इन महानुभावों के द्वारा तीर्थ रक्षा हेतु 1 लाख रूपए का प्रदत्त अनुदान के संबंध में उन्हें तीर्थरक्षक चक्रवर्ती पद प्रदान कर सम्मानित किया गया। निश्चित ही प्राप्त राशि तीर्थों की रक्षा, विकास और व्यवस्थाओं लिए व्यय की जाएगी ऐसा आपको विश्वास दिलाते है।

तीर्थ चक्रवर्ती योजना कमेटी को आर्थिक रूप से सुदृढ़ तो बनाएगी ही साथ ही समाज के प्रत्येक वर्ग को तीर्थो की रक्षा और विकास से जोड़ने में भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन भी करेगी।

जो सज्जन अब तक निम्नलिखित 'तीर्थ चक्रवर्ती' पद सुशोभित कर चुके है उनका परिचय निम्न प्रकार से है

कुमारी प्रवीणाबेन वखारिया
मुम्बई

श्री पंकज देवीलाल जी भोरावत
मुम्बई

श्रीमान जयेश कांतिलाल दोशी
मुम्बई

श्री पंकज चंदूलाल दोशी
मुम्बई

श्री विनय डी.के.जैन
दिल्ली

श्री राजेन्द्र जैन
गाजियाबाद

श्री संदीप जैन
कोलकाता

श्री रमाकांत जैन

शाह प्रवीण कुमार नेमचंद जैन
अहमदाबाद

श्री नामित जैन
दिल्ली

श्री अमित जैन
मेरठ

श्री सुभाष लोहाड़े
हैदराबाद

कु. लब्धि पूजा पारस मेहता
मुम्बई

श्री अभय हीरालाल जी शाह
मुम्बई

श्री सन्मतिकुमार मोतीलाल डोटिया
मुम्बई

भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी
धर्म चिह्न
मानस्तंभ
125 वर्ष – आस्था और संरक्षण का महापर्व!
22 अक्टूबर 2026 को 'भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी' अपने गौरवशाली सवा सौ साल पूर्ण कर रही है। सवा सौ साल पहले हमारे पावन तीर्थों पर अव्यवस्था का साम्राज्य था और मंदिरों में पूजा-प्रक्षाल की भी उचित व्यवस्था नहीं थी।
दानवीर सेठ माणिकचंद जी जैसे महापुरुषों की दूरदर्शिता ने 'तीर्थरक्षा' का जो दीप जलाया, आज उसी से हमारी संस्कृति सुरक्षित है। तीर्थों की वंदना ही 'जीवन-साफल्य' का मूलमंत्र है। सम्मेद शिखर जी जैसे पवित्र क्षेत्रों का संरक्षण हमारी विरासत बचाने के लिए अनिवार्य है।
आइए, इस ऐतिहासिक अवसर पर हम सब अपने तीर्थों की सुरक्षा और गरिमा बनाए रखने का संकल्प लें!
125 वर्ष
22 अक्टूबर 2026 - 22 अक्टूबर 2027
जम्बू प्रसाद जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष
संतोष पेंढारी
राष्ट्रीय महामंत्री
जवाहर लाल जैन
चेयरमैन (शतकोत्तर रजत वर्ष)
22 अक्टूबर, मथुरा चलो
22 OCTOBER 2026
22 OCTOBER 2026

RNI-MAHBIL/2010/33592
Published on 1st of every month
License to post without prepayment -
WPP No. MR/Tech/WPP-90/South/2025-27
Jain Tirth vandana, English-Hindi July 2026
Posted at Mumbai Patrika Channel, Mumbai GPO Sorting Office
Mumbai-400001, Regd. No. MCS/160/2025-27
Posted on 16th and 17th of every month

With Compliments

From:

GUJARAT FLUOROCHEMICALS
VALUE THROUGH GREEN CHEMISTRY

GUJARAT FLUOROCHEMICALS LTD.

(Company of Siddho Mal-Inox Group)

INOX GFL GROUP
BEYOND INFINITY

Corporate office :
INOX Towers, 17, Sector 16-A,
NOIDA - 201 301 (U.P.)
Tel: 0120-614 9600
Email : contact@gfl.co.in

New Delhi Office :
612-618, Narain Manzil, 6th Floor,
Barakhamba Road,
New Delhi - 110 001
Tel: +91-11-23327860
Email : siddhomal@vsnl.net

Printer, Publisher and Editor UMANATH RAMAJOR DUBEY on behalf of BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE, Hirabaug, 2nd Floor, C P Tank, MUMBAI-400 004. Printed at TRIMURTI PRINTERS, 5/7 Dadarkar Building, V P Road, C P Tank, MUMBAI-400 004 . Published from BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE, Hirabaug, 2nd Floor, C P Tank, MUMBAI-400 004.